فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّن كَذَبَ عَلَى اللَّهِ وَكَذَّبَ بِالصِّدْقِ إِذْ جَاءَهُ ۚ أَلَيْسَ فِي جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْكَافِرِينَ ﴿32﴾

३२. उस से ज़्यादा ज़ालिम कौन है जो अल्लाह (तआला) पर झूठ बोले और सच (दीन) उस के पास आये तो उसे झूठा बताये? क्या ऐसे काफ़िरों का ठिकाना नरक (जहन्नम) नहीं है?

وَالَّذِي جَاءَ بِالصِّدْقِ وَصَدَّقَ بِهِ ۙ أُولَٰئِكَ هُمُ الْمُتَّقُونَ ﴿33﴾

३३. और जो लोग सच (धर्म) लाये[1] और जो उसे सच जाने[2] यही लोग परहेज़गार हैं।

لَهُم مَّا يَشَاءُونَ عِندَ رَبِّهِمْ ۚ ذَٰلِكَ جَزَاءُ الْمُحْسِنِينَ ﴿34﴾

३४. उन के लिए उन के रब के पास (हर) वह चीज़ है जो ये चाहें, परहेज़गारों का यही बदला है।

لِيُكَفِّرَ اللَّهُ عَنْهُمْ أَسْوَأَ الَّذِي عَمِلُوا وَيَجْزِيَهُمْ أَجْرَهُم بِأَحْسَنِ الَّذِي كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿35﴾

३५. ताकि अल्लाह (तआला) उन से उन के बुरे कर्मों को मिटा दे और जो नेक काम उन्होंने किये हैं उन का अच्छा बदला अता करे।

أَلَيْسَ اللَّهُ بِكَافٍ عَبْدَهُ ۖ وَيُخَوِّفُونَكَ بِالَّذِينَ مِن دُونِهِ ۚ وَمَن يُضْلِلِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِنْ هَادٍ ﴿36﴾

३६. क्या अल्लाह (तआला) अपने बन्दों के लिए काफ़ी नहीं?[3] ये लोग आप को अल्लाह के सिवाय दूसरों से डरा रहे हैं, और जिसे अल्लाह गुमराह कर दे उसकी हिदायत करने वाला कोई नहीं।

وَمَن يَهْدِ اللَّهُ فَمَا لَهُ مِن مُّضِلٍّ ۗ أَلَيْسَ اللَّهُ بِعَزِيزٍ ذِي انتِقَامٍ ﴿37﴾

३७. और जिसे अल्लाह हिदायत अता कर दे उसे कोई गुमराह करने वाला नहीं। क्या अल्लाह (तआला) प्रभावशाली (ग़ालिब) और बदला लेने वाला नहीं है?

---

[1] इस से मुराद इस्लाम के रसूल हज़रत मोहम्मद ﷺ हैं जो सच्चा दीन लेकर आये, कुछ के क़रीब यह आम है, और इस से हर वह इंसान मुराद है जो तौहीद (एकेश्वरवाद) की दावत देता और अल्लाह के धर्म-विधान (शरीअत) की ओर लोगों की हिदायत करता है।

[2] कुछ ने इस से मुराद हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ ؓ लिया है जिन्होंने सब से पहले रसूलुल्लाह ﷺ की तसदीक़ की और उन पर ईमान लाये, कुछ ने इसे भी आम रखा है जिस में सभी ईमानवाले शामिल हैं जो रसूलुल्लाह ﷺ की रिसालत (ईशदूत होने पर) विश्वास (ईमान) रखते हैं और आप ﷺ को सच्चा मानते हैं।

[3] इस से मुराद हज़रत नबी ﷺ हैं, कुछ के ख़्याल में यह आम है, सभी अम्बिया (ईशदूत) और ईमान वाले इस में शामिल हैं, मतलब यह है कि आप को अल्लाह के सिवाय दूसरे से डराते हैं लेकिन जब अल्लाह आप का मददगार और पक्षधर (वली) है तो आप का कोई कुछ बिगाड़ नहीं सकता, वह उन सब के मुक़ाबले में आप को काफ़ी है।

وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ لَيَقُولُنَّ اللّٰهُ ۚ قُلْ أَفَرَءَيْتُمْ مَا تَدْعُونَ مِنْ دُونِ اللّٰهِ إِنْ أَرَادَنِيَ اللّٰهُ بِضُرٍّ هَلْ هُنَّ كٰشِفٰتُ ضُرِّهِ أَوْ أَرَادَنِي بِرَحْمَةٍ هَلْ هُنَّ مُمْسِكٰتُ رَحْمَتِهِ ۚ قُلْ حَسْبِيَ اللّٰهُ ۖ عَلَيْهِ يَتَوَكَّلُ الْمُتَوَكِّلُونَ (38)

३८. अगर आप इन से पूछें कि आकाश और धरती को किस ने पैदा किया है तो बेशक ये यही जवाब देंगे कि अल्लाह ने। आप उन से कहिए कि भला यह तो बताओ कि जिन्हें तुम अल्लाह के सिवाय पुकारते हो अगर अल्लाह तआला मुझे नुक़सान पहुँचाना चाहे तो क्या ये उस के नुक़सान को हटा सकते हैं या अल्लाह तआला मुझ पर कृपा (रहमत) करना चाहता हो तो क्या ये उसकी रहमत को रोक सकते हैं, (आप) कह दें कि अल्लाह (महान) मुझे क़ाफ़ी है, भरोसा करने वाले उसी पर भरोसा करते हैं।

قُلْ يٰقَوْمِ اعْمَلُوا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ إِنِّي عٰمِلٌ ۖ فَسَوْفَ تَعْلَمُونَ (39)

३९. कह दीजिए कि हे मेरी उम्मत के लोगो! तुम अपनी जगह पर अमल किये जाओ मैं भी अमल कर रहा हूँ,[1] जल्द ही तुम जान लोगे।

مَنْ يَأْتِيهِ عَذَابٌ يُخْزِيهِ وَيَحِلُّ عَلَيْهِ عَذَابٌ مُقِيمٌ (40)

४०. कि किस पर अपमानित (रूस्वा) करने वाला अज़ाब आता है और किस पर (स्थाई मार और) स्थाई (मुस्तक़िल) अज़ाब होता है?

إِنَّا أَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ لِلنَّاسِ بِالْحَقِّ ۖ فَمَنِ اهْتَدٰى فَلِنَفْسِهِ ۖ وَمَنْ ضَلَّ فَإِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ۖ وَمَا أَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيلٍ (41)

४१. बेशक आप पर हम ने हक़ के साथ यह किताब लोगों के लिए नाज़िल की है, तो जो इंसान सीधे रास्ते पर आ जाये उसके अपने लिए (फ़ायेदा) है और जो भटक जाये उसके भटकने का (भार) उसी पर है, आप उन के ज़िम्मेदार नहीं।

اَللّٰهُ يَتَوَفَّى الْأَنْفُسَ حِينَ مَوْتِهَا وَالَّتِي لَمْ تَمُتْ فِي مَنَامِهَا ۖ فَيُمْسِكُ الَّتِي قَضٰى عَلَيْهَا الْمَوْتَ وَيُرْسِلُ الْأُخْرٰى إِلٰى أَجَلٍ مُسَمًّى ۚ إِنَّ فِي ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ (42)

४२. अल्लाह ही जानों को उन की मौत के समय और जिन की मौत नहीं आयी उन्हें उनकी नींद के समय क़ब्ज़ा कर लेता है, फिर जिन पर मौत का हुक्म हो चुका है उन्हें तो रोक लेता है और दूसरे (आत्माओं) को एक मुक़र्रर वक़्त तक के लिए छोड़ देता है,[2] फ़िक्र

---

[1] यानी अगर तुम मेरी तौहीद (अद्वैत) की दावत (आमन्त्रण) को क़ुबूल नहीं करते जिस के साथ अल्लाह ने मुझे भेजा है तो ठीक है, तुम्हारी इच्छा, तुम अपनी हालत पर रहो जिस पर तुम हो, मैं उस हालत पर रहता हूँ जिस पर मुझे अल्लाह ने रखा है।

[2] यानी जब तक उन का मुक़र्रर वक़्त नहीं आता उस वक़्त तक के लिए उनकी रूहें वापस होती

करने वालों के लिए इस में यक़ीनी तौर से बहुत-सी निशानियाँ हैं।

أَمِ اتَّخَذُوا مِن دُونِ اللَّهِ شُفَعَاءَ ۚ قُلْ أَوَلَوْ كَانُوا لَا يَمْلِكُونَ شَيْئًا وَلَا يَعْقِلُونَ ﴿43﴾

४३. क्या उन लोगों ने अल्लाह तआला के सिवाय (दूसरों को) सिफ़ारिशी मुक़र्रर कर रखा है? (आप) कह दीजिए कि चाहे वे कुछ भी हक़ न रखते हों और न अक़्ल रखते हों।

قُل لِّلَّهِ الشَّفَاعَةُ جَمِيعًا ۖ لَّهُ مُلْكُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۖ ثُمَّ إِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ﴿44﴾

४४. कह दीजिए कि सभी सिफ़ारिशों का मालिक अल्लाह ही है। सारे आकाशों और धरती का मुल्क उसी के लिए है, फिर तुम सब उसी की तरफ़ लौटाये जाओगे।

وَإِذَا ذُكِرَ اللَّهُ وَحْدَهُ اشْمَأَزَّتْ قُلُوبُ الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِالْآخِرَةِ ۖ وَإِذَا ذُكِرَ الَّذِينَ مِن دُونِهِ إِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُونَ ﴿45﴾

४५. और जब अल्लाह अकेले का बयान किया जाये तो उन लोगों के दिल नफ़रत करने लगते हैं जो आख़िरत (परलोक) पर ईमान नहीं रखते, और जब उस के सिवाय (दूसरों) का बयान किया जाये तो उन के दिल वाजेह तौर से ख़ुश हो जाते हैं।[1]

قُلِ اللَّهُمَّ فَاطِرَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ عَالِمَ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ أَنتَ تَحْكُمُ بَيْنَ عِبَادِكَ فِي مَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ﴿46﴾

४६. (आप) कह दीजिए कि हे अल्लाह आकाशों और धरती के पैदा करने वाले, छिपी और ज़ाहिर के जानने वाले, तू ही अपने बंदों में उन बातों का फ़ैसला करेगा जिन में वे उलझ रहे थे।

रहती हैं, यह छोटी मौत है। यही विषय सूर: अन्आम ६० और ६१ में बयान किया गया है, फिर भी वहाँ छोटी मौत की चर्चा पहले और बड़ी मौत की बाद में है जबकि यहाँ उस के उल्टा है।

[1] हाँ, जब यह कहा जाता कि फ़लाँ-फ़लाँ भी माबूद हैं या वह भी तो अल्लाह के नेक बन्दे हैं, वह भी तो कुछ हक़ रखते हैं, वह भी मुश्किलकुशा हैं और ज़रूरत पूरी करते हैं तो यह मुश्रेकीन ख़ुश हो जाते हैं। गुमराहों की आज यही हालत है, जब उन से कहा जाता है कि केवल "हे अल्लाह मदद" कहो, क्योंकि अल्लाह के सिवाय कोई मदद करने वाला नहीं तो ग़ुस्सा हो जाते हैं, यह बात उन्हें बहुत बुरी लगती है, लेकिन जब "या अली मदद" या "या रसूल मदद" कहा जाये, इसी तरह दूसरे मुर्दों से मदद माँगी और गुहार की जाये, जैसे "या शेख़ अब्दुल क़ादिर शैअन लिल्लाह" वग़ैरह तो फिर उन के दिल की कलियाँ खिल जाती हैं।

وَلَوْ أَنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا مَا فِي الْأَرْضِ جَمِيعًا وَمِثْلَهُ مَعَهُ لَافْتَدَوْا بِهِ مِنْ سُوءِ الْعَذَابِ يَوْمَ الْقِيَامَةِ ۚ وَبَدَا لَهُمْ مِنَ اللَّهِ مَا لَمْ يَكُونُوا يَحْتَسِبُونَ ﴿47﴾

४७. और अगर ज़ालिमों के पास वह सब कुछ हो जो धरती पर है और उस के साथ उतना ही और हो, तो भी बुरे दण्ड (सज़ा) के बदले में क़यामत के दिन ये सब कुछ दे दें, और उन के सामने अल्लाह की तरफ़ से वह ज़ाहिर होगा जिसका अंदाज़ा भी उन्हें न था।[1]

وَبَدَا لَهُمْ سَيِّئَاتُ مَا كَسَبُوا وَحَاقَ بِهِمْ مَا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ ﴿48﴾

४८. और जो कुछ उन्होंने किया था उस की बुराईयाँ उन पर खुल जायेंगी और जिसके साथ वे मज़ाक करते थे वह उन्हें आ घेरेगा।

فَإِذَا مَسَّ الْإِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَانَا ثُمَّ إِذَا خَوَّلْنَاهُ نِعْمَةً مِنَّا قَالَ إِنَّمَا أُوتِيتُهُ عَلَىٰ عِلْمٍ ۚ بَلْ هِيَ فِتْنَةٌ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿49﴾

४९. इंसान को जब कोई तकलीफ़ पहुँचती है तो हमें पुकारता है[2] फिर जब हम उसे अपनी तरफ़ से कोई सुख दे दें तो कहने लगता है कि यह तो मैं सिर्फ़ अपनी अक़्ल की वजह से अता किया गया हूँ[3] बल्कि यह परीक्षा (इम्तेहान) है, लेकिन उन में से ज़्यादातर लोग अन्जान हैं।

قَدْ قَالَهَا الَّذِينَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَمَا أَغْنَىٰ عَنْهُمْ مَا كَانُوا يَكْسِبُونَ ﴿50﴾

५०. इन से पहले के लोग भी यही बात कह चुके हैं तो उनकी कार्यवाही उन के कुछ काम न आयी।

فَأَصَابَهُمْ سَيِّئَاتُ مَا كَسَبُوا ۚ وَالَّذِينَ ظَلَمُوا مِنْ هَٰؤُلَاءِ سَيُصِيبُهُمْ سَيِّئَاتُ مَا كَسَبُوا وَمَا هُمْ بِمُعْجِزِينَ ﴿51﴾

५१. फिर उन की सभी बुराईयाँ उन पर आ पड़ी, और इन में से भी जो पापी हैं उन की की हुई बुराई भी अब उन पर आ पड़ेगी, ये (हमें) पराजित (आजिज़) कर देने वाले नहीं।

---

[1] यानी अज़ाब की सख़्ती और उसका डर और उस की क़िस्में और रूप ऐसे होंगे कि कभी उन के ध्यान में न आये होंगे।

[2] यह जाति के मुताबिक़ इंसान की चर्चा है, यानी इन्सानों की बहुसंख्यक (अकसरियत) की हालत यह है कि जब उनको रोग, भूक या कोई दूसरा दुख पहुँचता है तो उस से मुक्ति (नजात) पाने के लिए अल्लाह से दुआयें करता है और उस के आगे गिड़गिड़ाता है।

[3] यानी सुख मिलते ही सरकशी और ज़्यादती का रास्ता अपना लेता है और कहता है कि इस में अल्लाह का क्या एहसान, यह तो मेरी चतुराई का नतीजा है या जो इल्म और सिफ़त मेरे पास है उस की वजह से यह सुख-सुविधायें (ऐशो-आराम) मिली हैं या मुझे यह जानकारी थी कि यह चीज़ें मुझे मिलेंगी क्योंकि अल्लाह के क़रीब मेरा बहुत स्थान (मुक़ाम) है।

أَوَلَمْ يَعْلَمُوٓا أَنَّ اللّٰهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ۚ إِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿52﴾

५२. क्या उन्हें यह ज्ञान (इल्म) नहीं कि अल्लाह (तआला) जिस के लिए चाहे जीविका (रिज़्क़) बढ़ा देता है और तंग (भी), ईमानवालों के लिए इस में बड़ी-बड़ी निशानियाँ हैं।

قُلْ يٰعِبَادِىَ الَّذِيْنَ أَسْرَفُوْا عَلٰٓى أَنْفُسِهِمْ لَا تَقْنَطُوْا مِنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِ ۚ إِنَّ اللّٰهَ يَغْفِرُ الذُّنُوْبَ جَمِيْعًا ۚ إِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿53﴾

५३. (मेरी तरफ़ से) कह दो कि हे मेरे बन्दो! जिन्होंने अपनी जानों पर ज़ुल्म किये हैं तुम अल्लाह की कृपा (रहमत) से निराश न हो जाओ, बेशक अल्लाह (तआला) सभी पापों को माफ़ कर देता है। हक़ीक़त में वह बड़ा माफ़ करने वाला बड़ा रहम करने वाला है।[1]

وَأَنِيْبُوْٓا إِلٰى رَبِّكُمْ وَأَسْلِمُوْا لَهٗ مِنْ قَبْلِ أَنْ يَّأْتِيَكُمُ الْعَذَابُ ثُمَّ لَا تُنْصَرُوْنَ ﴿54﴾

५४. और तुम सब अपने रब की तरफ़ झुक पड़ो और उसका आज्ञापालन (पैरवी) किये जाओ, इस से पहले कि तुम्हारे पास अज़ाब आ जाये और फिर तुम्हारी मदद न की जाये।

وَاتَّبِعُوْٓا أَحْسَنَ مَآ أُنْزِلَ إِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ مِّنْ قَبْلِ أَنْ يَّأْتِيَكُمُ الْعَذَابُ بَغْتَةً وَّأَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ ﴿55﴾

५५. और पैरवी करो उस सब से बेहतर की जो तुम्हारी तरफ़ तुम्हारे रब की तरफ़ से नाज़िल की गयी है, इस से पहले कि तुम पर अचानक अज़ाब आ जाये और तुम्हें ख़बर भी न हो।

أَنْ تَقُوْلَ نَفْسٌ يّٰحَسْرَتٰى عَلٰى مَا فَرَّطْتُّ فِىْ جَنْۢبِ اللّٰهِ وَإِنْ كُنْتُ لَمِنَ السّٰخِرِيْنَ ﴿56﴾

५६. (ऐसा न हो कि) कोई इंसान कहे कि हाय अफ़सोस इस बात पर कि मैंने अल्लाह (तआला) के बारे में सुस्ती की, बल्कि मैं मज़ाक उड़ाने वालों में ही रहा।

أَوْ تَقُوْلَ لَوْ أَنَّ اللّٰهَ هَدٰىنِىْ لَكُنْتُ مِنَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿57﴾

५७. या कहे कि अगर अल्लाह मुझे हिदायत देता तो मैं भी परहेज़गार लोगों में होता।

---

[1] इस आयत में अल्लाह की माफ़ी के विस्तार (कुशादगी) का बयान है। إسراف (इसराफ़) का मतलब है पापों की अधिकता और उस में ज़्यादती। "अल्लाह की दया (रहमत) से निराश न हो" का मतलब है कि ईमान लाने या तौबा (क्षमा-याचना) से पहले जितने भी पाप किये हों इन्सान यह न समझे कि मैं तो बड़ा पापी हूँ, मुझे अल्लाह कैसे माफ़ करेगा? बल्कि सच्चे दिल से अगर ईमान को क़ुबूल करेगा या ख़ालिस तौबा करेगा तो अल्लाह तआला (परमेश्वर) सब पापों को माफ़ कर देगा।

५८. या अज़ाबों को देखकर कहे, काश! किसी तरह मेरा लौट जाना हो जाता तो मैं भी नेक लोगों में हो जाता।

أَوْ تَقُولَ حِينَ تَرَى الْعَذَابَ لَوْ أَنَّ لِي كَرَّةً فَأَكُونَ مِنَ الْمُحْسِنِينَ (58)

५९. हाँ (हाँ) बेशक तुम्हारे पास मेरी आयतें पहुँच चुकी थीं जिन्हें तूने झुठलाया और घमंड (और गर्व) किया, और तू था ही काफ़िरों में।

بَلَىٰ قَدْ جَاءَتْكَ آيَاتِي فَكَذَّبْتَ بِهَا وَاسْتَكْبَرْتَ وَكُنْتَ مِنَ الْكَافِرِينَ (59)

६०. और जिन लोगों ने अल्लाह पर झूठ गढ़ा है तो आप देखेंगे कि क़यामत के दिन उन के मुँह काले हो गये होंगे। क्या घमंड करने वालों का ठिकाना नरक में नहीं?[1]

وَيَوْمَ الْقِيَامَةِ تَرَى الَّذِينَ كَذَبُوا عَلَى اللَّهِ وُجُوهُهُمْ مُسْوَدَّةٌ ۚ أَلَيْسَ فِي جَهَنَّمَ مَثْوًى لِلْمُتَكَبِّرِينَ (60)

६१. और जिन लोगों ने संयम (तक़वा) किया उन्हे अल्लाह (तआला) उनकी कामयाबी के साथ बचा लेगा, उन्हें कोई दुख छू भी न सकेगा और वे न किसी तरह दुखी होंगे।

وَيُنَجِّي اللَّهُ الَّذِينَ اتَّقَوْا بِمَفَازَتِهِمْ لَا يَمَسُّهُمُ السُّوءُ وَلَا هُمْ يَحْزَنُونَ (61)

६२. अल्लाह सभी चीज़ों का जन्मदाता है, और वही हर चीज़ का संरक्षक (निगराँ) है।

اللَّهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ ۖ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ وَكِيلٌ (62)

६३. आकाशों और धरती की कुंजियों का मालिक वही है।[2] जिन-जिन लोगों ने अल्लाह की आयतों का इंकार किया है वही नुक़सान उठाने वाले हैं।

لَهُ مَقَالِيدُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۗ وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ اللَّهِ أُولَٰئِكَ هُمُ الْخَاسِرُونَ (63)

६४. (आप) कह दीजिए कि हे मूर्खो! क्या तुम मुझ से अल्लाह के सिवाय दूसरों की इबादत के लिए कहते हो।

قُلْ أَفَغَيْرَ اللَّهِ تَأْمُرُونِّي أَعْبُدُ أَيُّهَا الْجَاهِلُونَ (64)

---

[1] हदीस में है «الكِبْرُ بَطَرُ الحَقِّ وَغَمْطُ النَّاسِ» "सच का इंकार और लोगों को हीन (हक़ीर) समझना घमंड है।" यह सवाल सकारात्मक (मुस्बत) है यानी अल्लाह की इताअत से इन्कार करने वालों की जगह नरक है।

[2] مَقَالِيد यह مِقْلِيد और مِقْلَاد (मिक़लाद) का बहुवचन (जमा) है। (फ़तहुल क़दीर) जिसका मतलब कुंजियाँ हैं। कुछ ने 'ख़ज़ाना' किया है, मतलब दोनों तरह एक ही है कि सभी विषय की बागडोर उसी के हाथ में है।

६५. और बेशक तेरी तरफ़ भी और तुझ से पहले (के सभी नबियों) की तरफ़ भी वह्यी की गयी है कि अगर तूने शिर्क किया तो बेशक तेरा अमल बरबाद हो जायेगा और निश्चित (यक़ीनी) रूप से तू नुक़सान उठाने वालों में से हो जायेगा ।[1]

وَلَقَدْ أُوحِيَ إِلَيْكَ وَإِلَى الَّذِينَ مِنْ قَبْلِكَ لَئِنْ أَشْرَكْتَ لَيَحْبَطَنَّ عَمَلُكَ وَلَتَكُونَنَّ مِنَ الْخَاسِرِينَ (65)

६६. बल्कि तू अल्लाह ही की इबादत कर और शुक्रिया अदा करने वालों में से हो जा ।

بَلِ اللَّهَ فَاعْبُدْ وَكُنْ مِنَ الشَّاكِرِينَ (66)

६७. और उन लोगों ने जैसा सम्मान अल्लाह का करना चाहिए था नहीं किया, सारी धरती क़यामत के दिन उसकी मुट्ठी में होगी और सारा आकाश उस के दायें हाथ में लपेटे हुए होंगे । वह पाक और बुलन्द है हर उस चीज़ से जिसे लोग उसका साझीदार बनायें ।

وَمَا قَدَرُوا اللَّهَ حَقَّ قَدْرِهِ وَالْأَرْضُ جَمِيعًا قَبْضَتُهُ يَوْمَ الْقِيَامَةِ وَالسَّمَاوَاتُ مَطْوِيَّاتٌ بِيَمِينِهِ سُبْحَانَهُ وَتَعَالَى عَمَّا يُشْرِكُونَ (67)

६८. और सूर (नरसिंघा) फूंक दिया जायेगा तो आकाशों और धरती वाले सभी बेहोश होकर गिर पड़ेंगे लेकिन जिसे अल्लाह चाहे,[2] फिर दोबारा सूर फूंका जायेगा तो वे अचानक खड़े होकर देखने लग जायेंगे ।[3]

وَنُفِخَ فِي الصُّورِ فَصَعِقَ مَنْ فِي السَّمَاوَاتِ وَمَنْ فِي الْأَرْضِ إِلَّا مَنْ شَاءَ اللَّهُ ثُمَّ نُفِخَ فِيهِ أُخْرَى فَإِذَا هُمْ قِيَامٌ يَنْظُرُونَ (68)

---

[1] "अगर तूने शिर्क किया" का मतलब यह है कि अगर मौत शिर्क पर आई और उस से तौबा (क्षमा-याचना) न की । संबोधन (ख़िताब) अगरचे मोहम्मद ﷺ से है जो शिर्क से पाक (पवित्र) भी थे और भविष्य (मुस्तक़बिल) के लिए महफ़ूज़ भी, क्योंकि पैग़म्बर अल्लाह की हिफ़ाज़त और संरक्षण (पनाह) में होता है, उनसे शिर्क होने की कोई उम्मीद न थी लेकिन यह हक़ीक़त में पैरोकारों की तरफ़ इशारा और उनको समझाना मक़सद था ।

[2] यानी जिन को अल्लाह चाहेगा उन्हें मौत नहीं आयेगी, जैसे जिब्रील, मीकाईल और इस्राफ़ील फ़रिश्ते । कुछ कहते हैं कि रिज़वान फ़रिश्ता यानी अर्श को उठाने वाले फ़रिश्ते और स्वर्ग और नरक पर तैनात अधिकारी ।

[3] चार नफ़ख़ों (फूंकों) के मानने वालों के क़रीब यह चौथा, तीन मानने वालों के क़रीब तीसरा और दो मानने वालों के क़रीब यह दूसरा नफ़ख़ा है । जो भी हो, इस फूंक से सब ज़िन्दा होकर मैदाने महशर में सारी दुनिया के रब के दरबार में हाज़िर हो जायेंगे जहाँ हिसाब-किताब होगा ।

وَأَشْرَقَتِ الْأَرْضُ بِنُورِ رَبِّهَا وَوُضِعَ الْكِتَٰبُ وَجِاْيٓءَ بِالنَّبِيِّۦنَ وَالشُّهَدَآءِ وَقُضِيَ بَيْنَهُم بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿69﴾

६९. और धरती अपने रब की दिव्य ज्योति (नूर) से जगमगा उठेगी,[1] आमालनामा (कर्मपत्र) पेश किये जायेंगे, नबियों और गवाहों को लाया जायेगा और लोगों के बीच इंसाफ़ के साथ फ़ैसले कर दिये जायेंगे और उन पर ज़ुल्म न किया जायेगा।

وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ وَهُوَ أَعْلَمُ بِمَا يَفْعَلُونَ ﴿70﴾

७०. और जिस इंसान ने जो कुछ किया है पूरी तरह से दे दिया जायेगा, और जो कुछ भी लोग कर रहे हैं, वह अच्छी तरह जानने वाला है।

وَسِيقَ الَّذِينَ كَفَرُوٓا۟ إِلَىٰ جَهَنَّمَ زُمَرًا ۖ حَتَّىٰٓ إِذَا جَآءُوهَا فُتِحَتْ أَبْوَٰبُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَآ أَلَمْ يَأْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنكُمْ يَتْلُونَ عَلَيْكُمْ ءَايَٰتِ رَبِّكُمْ وَيُنذِرُونَكُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ هَٰذَا ۚ قَالُوا۟ بَلَىٰ وَلَٰكِنْ حَقَّتْ كَلِمَةُ الْعَذَابِ عَلَى الْكَٰفِرِينَ ﴿71﴾

७१. और काफ़िरों के झुंड के झुंड नरक की तरफ़ हाँके जायेंगे,[2] जब वे उस के क़रीब पहुँच जायेंगे उस के दरवाज़े उन के लिए खोल दिये जायेंगे और वहाँ के रक्षक (निगराँ) उन से पूछेंगे कि क्या तुम्हारे पास तुम में से रसूल (संदेशवाहक) नहीं आये थे? जो तुम पर तुम्हारे रब की आयतें पढ़ते थे और तुम्हें इस दिन की भेंट से सावधान (आगाह) करते थे, ये जवाब देंगे कि हाँ, क्यों नहीं! लेकिन अज़ाब का हुक्म काफ़िरों पर साबित हो गया।

قِيلَ ادْخُلُوٓا۟ أَبْوَٰبَ جَهَنَّمَ خَٰلِدِينَ فِيهَا ۖ فَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِينَ ﴿72﴾

७२. कहा जायेगा कि अब नरक के दरवाज़ों में दाख़िल हो जाओ जहाँ वे हमेशा रहेंगे, बस नाफ़रमानों का ठिकाना बड़ा बुरा है।

---

[1] इस नूर (प्रकाश) से कुछ ने इंसाफ़ और कुछ ने हुक्म मुराद लिया है, लेकिन इसे वास्तविक अर्थ (हक़ीक़ी मायने) में लेने में कोई चीज रूकावट नहीं है, क्योंकि अल्लाह आकाशों और धरती का नूर है। (फ़तहुल क़दीर)

[2] (ज़ुमर) زُمَرٌ यह زُمَرٌ (जम्र) से बना है जिसका मतलब स्वर है। हर गिरोह या समूह में शोर और आवाज़ें जरूर होती हैं, इसलिए यह गिरोह और समूह के लिए भी इस्तेमाल होता है। मतलब यह है कि काफ़िरों को नरक की ओर समूहों में ले जाया जायेगा, एक के पीछे एक गिरोह।

وَسِيقَ الَّذِينَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ إِلَى الْجَنَّةِ زُمَرًا ۖ حَتَّىٰ إِذَا جَاءُوهَا وَفُتِحَتْ أَبْوَابُهَا وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَا سَلَامٌ عَلَيْكُمْ طِبْتُمْ فَادْخُلُوهَا خَالِدِينَ (73)

७३. और जो लोग अपने रब से डरते थे उन के गुट के गुट जन्नत की तरफ़ भेज दिये जायेंगे, यहाँ तक कि जब उस के क़रीब आ जायेंगे और दरवाज़े खोल दिये जायेंगे[1] और वहाँ के रक्षक (निगराँ) उन से कहेंगे कि तुम पर सलाम हो, तुम ख़ुश रहो! बस तुम इन में हमेशा के लिए चले जाओ।

وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلَّهِ الَّذِي صَدَقَنَا وَعْدَهُ وَأَوْرَثَنَا الْأَرْضَ نَتَبَوَّأُ مِنَ الْجَنَّةِ حَيْثُ نَشَاءُ ۖ فَنِعْمَ أَجْرُ الْعَامِلِينَ (74)

७४. और यह कहेंगे कि अल्लाह का शुक्र है जिस ने अपना वादा पूरा किया और हमें इस धरती का वारिस बना दिया कि स्वर्ग में जहाँ चाहें निवास करें, तो नेकी करने वालों का क्या ही अच्छा बदला है।

وَتَرَى الْمَلَائِكَةَ حَافِّينَ مِنْ حَوْلِ الْعَرْشِ يُسَبِّحُونَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ ۖ وَقُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْحَقِّ وَقِيلَ الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ (75)

७५. और तू फ़रिश्तों को अल्लाह के अर्श के चारों तरफ़ घेरा बनाये हुए अपने रब की तारीफ़ और तस्बीह करते हुए देखेगा[2] और उन में इंसाफ़ वाला फ़ैसला किया जायेगा और कह दिया जायेगा कि सभी तारीफ़ें (प्रशंसायें) अल्लाह ही के लिए हैं जो सारी दुनिया का रब है।

---

[1] हदीस में आता है कि जन्नत के आठ दरवाज़े हैं। उन में एक का नाम 'रय्यान' है जिस से केवल व्रत रखने वाले (रोज़ेदार) दाख़िल होंगे। (सहीह बुख़ारी न॰ २२५७, मुस्लिम न॰ ८०८) इसी तरह दूसरे दरवाज़ों के भी नाम होंगे, जैसे नमाज़ का दरवाज़ा, ज़कात का दरवाज़ा, जिहाद (धर्मयुद्ध) का दरवाज़ा वग़ैरह। (सहीह बुख़ारी, किताबुस सेयाम, मुस्लिम-किताबुज़ ज़कात)। दरवाज़े की चौड़ाई चालीस साल की दूरी के बराबर होगी, फिर भी वे भरे हुए होंगे। (सहीह मुस्लिम, किताबुज़ ज़ोहद) सब से पहले जन्नत का दरवाज़ा खटखटाने वाले नबी ﷺ होंगे। (मुस्लिम, किताबुल ईमान)

[2] अल्लाह के फ़ैसले के बाद जब ईमानवाले जन्नत में और काफ़िर व मुशरिक नरक में चले जायेंगे। आयत में उस के बाद का बयान किया गया है कि फ़रिश्ते अल्लाह के अर्श (आसन) को घेरे हुए अल्लाह की तारीफ़ और तस्बीह में लीन होंगे।

सूरतुल-मोमिन-४०

سُوْرَةُ الْمُؤْمِنْ

सूर: मोमिन मक्का में नाजिल हुई और इस में पच्चासी आयतें और नौ रूकूअ हैं।

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूँ, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

१. हा॰ मीम॰।

حٰمٓ ﴿1﴾

२. इस किताब का नाजिल करना उस अल्लाह की तरफ़ से है जो ग़ालिब और जानने वाला है।

تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ﴿2﴾

३. गुनाहों को माफ़ करने वाला और तौबा को क़ुबूल करने वाला, सख़्त अज़ाब वाला, एहसान और क़ुदरत वाला, जिस के सिवाय कोई मा'बूद नहीं, उसी की तरफ़ वापस लौटना है।

غَافِرِ الذَّنْبِ وَقَابِلِ التَّوْبِ شَدِيْدِ الْعِقَابِ ذِى الطَّوْلِ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ اِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ﴿3﴾

४. अल्लाह (तआला) की आयतों में वही लोग झगड़ते हैं जो काफ़िर हैं, तो उन लोगों का नगरों में चलना-फिरना आप को धोखे में न डाल दे।[1]

مَا يُجَادِلُ فِىْٓ اٰيٰتِ اللّٰهِ اِلَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَلَا يَغْرُرْكَ تَقَلُّبُهُمْ فِى الْبِلَادِ ﴿4﴾

५. उन से पहले नूह की क़ौम ने और उन के बाद की दूसरी क़ौमों ने भी झुठलाया था, और हर उम्मत ने अपने रसूल को क़ैदी बनाने का इरादा किया, और झूठ के ज़रिये हठधर्मी की ताकि उन से सच को नाश कर दें, बस मैंने उनको पकड़ लिया, तो मेरी तरफ़ से कैसा दण्ड हुआ।

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّالْاَحْزَابُ مِنْۢ بَعْدِهِمْ وَهَمَّتْ كُلُّ اُمَّةٍۭ بِرَسُوْلِهِمْ لِيَاْخُذُوْهُ وَجٰدَلُوْا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوْا بِهِ الْحَقَّ فَاَخَذْتُهُمْ فَكَيْفَ كَانَ عِقَابِ ﴿5﴾

६. और इसी तरह आप के रब का हुक्म काफ़िरों पर साबित हो गया कि वे नरकवासी हैं।[2]

وَكَذٰلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنَّهُمْ اَصْحٰبُ النَّارِ ﴿6﴾

---

[1] यानी यह काफ़िर और मुशरिक जो तिजारत करते हैं और उस के लिए कई नगरों में आते जाते और भारी फ़ायेदा हासिल करते हैं, यह अपने कुफ़्र के सबब जल्द ही अल्लाह की पकड़ में आ जायेंगे, यह मौक़ा ज़रूर दिये जा रहे हैं लेकिन उन्हें बेकार नहीं छोड़ा जायेगा।

[2] इस से मक़सद इस बात का स्पष्टीकरण (वज़ाहत) करना है कि जैसे पिछली उम्मतों पर तेरे रब का अज़ाब साबित हुआ और बरबाद कर दिये गये, अगर यह मक्का के नागरिक भी तुझे झुठलाने और विरोध (मुख़ालफ़त) करने से न रूके और झूठ झगड़े को न छोड़ा तो यह भी इसी तरह अल्लाह के अज़ाब में पकड़ लिये जायेंगे, फिर कोई उन्हें बचाने वाला न होगा।

الَّذِيْنَ يَحْمِلُوْنَ الْعَرْشَ وَمَنْ حَوْلَهٗ يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَيَسْتَغْفِرُوْنَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۚ رَبَّنَا وَسِعْتَ كُلَّ شَيْءٍ رَّحْمَةً وَّعِلْمًا فَاغْفِرْ لِلَّذِيْنَ تَابُوْا وَاتَّبَعُوْا سَبِيْلَكَ وَقِهِمْ عَذَابَ الْجَحِيْمِ ﴿7﴾

७. अर्श के उठाने वाले और उस के आस-पास के फ़रिश्ते अपने रब की तस्बीह तारीफ़ के साथ-साथ करते हैं और उस पर ईमान रखते हैं, और ईमानवालों के लिए इस्तिग़फ़ार करते हैं; (कहते हैं) कि हे हमारे रब तूने हर चीज़ को अपनी दया (रहमत) और ज्ञान (इल्म) से घेर रखा है, तो तू उन्हें माफ़ कर दे जो माफ़ी माँगें और तेरे रास्ते की पैरवी करें और तू उन्हें नरक के अज़ाब से भी सुरक्षित (महफ़ूज़) रख।[1]

رَبَّنَا وَاَدْخِلْهُمْ جَنّٰتِ عَدْنِ ِالَّتِيْ وَعَدْتَّهُمْ وَمَنْ صَلَحَ مِنْ اٰبَآئِهِمْ وَاَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيّٰتِهِمْ ۭ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿8﴾

८. हे हमारे रब! तू उन्हें हमेशा रहने वाले स्वर्ग में ले जा, जिनका तूने उनको वादा दिया है, और उन के बुज़ुर्गों और पत्नियों और सन्तानों में से (भी) उन सबको जो नेक हैं। बेशक तू ज़बरदस्त और हिक्मत वाला है।

وَقِهِمُ السَّيِّاٰتِ ۭ وَمَنْ تَقِ السَّيِّاٰتِ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ رَحِمْتَهٗ ۭ وَذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿9﴾

९. और उन्हें कुकर्मों से भी महफ़ूज़ रख, (सच तो यह है कि) उस दिन तूने जिसे बुरे कामों (अशुभ) से बचा लिया उस पर तूने रहमत कर दी, और सब से बड़ी कामयाबी तो यही है।[2]

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُنَادَوْنَ لَمَقْتُ اللّٰهِ اَكْبَرُ مِنْ مَّقْتِكُمْ اَنْفُسَكُمْ اِذْ تُدْعَوْنَ اِلَى الْاِيْمَانِ فَتَكْفُرُوْنَ ﴿10﴾

१०. बेशक जिन्होंने कुफ़्र किया उन्हें यह आवाज़ दी जायेगी कि निश्चय अल्लाह का तुम पर नाराज़ होना उस से बहुत ज़्यादा है, जो तुम नाराज़ होते थे अपने मन से जब तुम ईमान की तरफ़ बुलाये जाते थे, फिर कुफ़्र करने लगते थे।[3]

---

[1] इस में निकटता प्राप्त (मुक़र्रब) फ़रिश्तों के एक ख़ास गिरोह की चर्चा है और वे जो कुछ करते हैं, उसका स्पष्टीकरण (वज़ाहत) है। यह वह फ़रिश्ते हैं जो अर्श उठाने वाले हैं और वह फ़रिश्ते हैं जो अर्श के चारों तरफ़ हैं।

[2] यानी आख़िरत के अज़ाब से बच जाना और जन्नत में दाख़िला हो जाना यही सब से बड़ी कामयाबी है, क्योंकि इस जैसी कामयाबी कोई नहीं और इसके बराबर कोई कामयाबी नहीं।

[3] مَقْتٌ (मक़्त) सख़्त ग़ुस्सा को कहते हैं, नरकवासी ख़ुद को नरक में झुलसते देखकर बहुत नाराज़ होंगे, उस समय उन से कहा जायेगा कि दुनिया में जब तुम्हें ईमान का आमन्त्रण (दावत) दिया जाता था और तुम इंकार करते थे तो अल्लाह तआला इस से कहीं ज़्यादा तुम पर नाराज़ होता था जितने आज तुम ख़ुद अपने ऊपर नाराज़ हो रहे हो, यह अल्लाह के उस ग़ुस्सा का ही नतीजा है कि आज तुम नरक में हो।

قَالُوْا رَبَّنَآ اَمَتَّنَا اثْنَتَيْنِ وَاَحْيَيْتَنَا اثْنَتَيْنِ فَاعْتَرَفْنَا بِذُنُوْبِنَا فَهَلْ اِلٰى خُرُوْجٍ مِّنْ سَبِيْلٍ ﴿11﴾

११. (वे) कहेंगे कि हे हमारे रब! तूने हमें दोबारा मारा और दोबारा ही जिन्दा किया, अब हम अपने पापों को क़ुबूल करते हैं तो क्या अब कोई रास्ता निकलने का भी है?

ذٰلِكُمْ بِاَنَّهٗٓ اِذَا دُعِيَ اللّٰهُ وَحْدَهٗ كَفَرْتُمْ ۚ وَاِنْ يُّشْرَكْ بِهٖ تُؤْمِنُوْا ۭ فَالْحُكْمُ لِلّٰهِ الْعَلِيِّ الْكَبِيْرِ ﴿12﴾

१२. यह (अज़ाब) तुम्हें इसलिए है कि जब केवल अकेले अल्लाह की तरफ़ बुलाया जाता तो तुम इंकार कर देते थे; और अगर उस के साथ किसी को शामिल कर लिया जाता था तो तुम क़ुबूल कर लेते थे,[1] तो अब फ़ैसला अल्लाह सब से बुलन्द और बड़े का ही है।

هُوَ الَّذِيْ يُرِيْكُمْ اٰيٰتِهٖ وَيُنَزِّلُ لَكُمْ مِّنَ السَّمَاۗءِ رِزْقًا ۭ وَمَا يَتَذَكَّرُ اِلَّا مَنْ يُّنِيْبُ ﴿13﴾

१३. वही है जो तुम्हें अपनी निशानियाँ (चिन्ह) दिखाता है और तुम्हारे लिए आसमान से जीविका (रिज़्क़) उतारता है। नसीहत तो वही हासिल करते हैं जो (अल्लाह की तरफ़) झुकते हैं।

فَادْعُوا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ ﴿14﴾

१४. तुम अल्लाह को पुकारते रहो उस के लिए दीन (धर्म) को ख़ालिस करके, यद्यपि (अगरचे) काफ़िर बुरा मानें।[2]

رَفِيْعُ الدَّرَجٰتِ ذُو الْعَرْشِ ۚ يُلْقِي الرُّوْحَ مِنْ اَمْرِهٖ عَلٰي مَنْ يَّشَاۗءُ مِنْ عِبَادِهٖ لِيُنْذِرَ يَوْمَ التَّلَاقِ ﴿15﴾

१५. बुलन्द दर्जों वाला अर्श का मालिक! वह अपने बंदों में से जिस पर चाहता है वह्यी (प्रकाशना) नाज़िल करता है[3] ताकि वह भेंट (मुलाक़ात) के दिन से डराये।

---

[1] यह उन के नरक से न निकाले जाने का सबब बताया है कि तुम दुनिया में अल्लाह की तौहीद (एकता) का इंकार करते थे और शिर्क तुम्हें पसन्द था, इसलिए अब नरक के स्थायी (मुस्तक़िल) अज़ाब के सिवाय तुम्हारे लिये कुछ नहीं।

[2] यानी जब सब कुछ अल्लाह अकेला ही करने वाला है तो काफ़िरों को कितना ही बुरा लगे, केवल उसी एक अल्लाह को पुकारो उसके लिए इबादत और इताअत को ख़ालिस करते हुए।

[3] روح (रूह) आत्मा से मुराद वह्यी (प्रकाशना) है जो बन्दों ही में से किसी को रिसालत (ईशदूतत्व) के लिए चुन कर नाज़िल करता है। वह्यी (प्रकाशना) को रूह (आत्मा) इसलिए कहा गया है कि जिस तरह रूह में इंसानी ज़िन्दगी के वजूद और हिफ़ाज़त का भेद (राज़) छिपा है, उसी तरह वह्यी से भी उन इन्सानी दिलों में जीवन की लहर दौड़ जाती है जो पहले कुफ़्र और शिर्क के सबब मुर्दा होते हैं।

१६. जिस दिन (सब) लोग ज़ाहिर हो जायेंगे,[1] उन की कोई चीज़ अल्लाह से छिपी न रहेगी। आज किस का राज्य (मुल्क) है?[2] सिर्फ़ अल्लाह एक और ज़बरदस्त का।

يَوْمَ هُم بَارِزُونَ ۖ لَا يَخْفَىٰ عَلَى اللَّهِ مِنْهُمْ شَيْءٌ ۚ لِّمَنِ الْمُلْكُ الْيَوْمَ ۖ لِلَّهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ﴿16﴾

१७. आज हर जान को उसकी करनी का फल दिया जायेगा, आज (किसी तरह का) जुल्म नहीं, बेशक अल्लाह (तआला) जल्द ही हिसाब करने वाला है।

الْيَوْمَ تُجْزَىٰ كُلُّ نَفْسٍ بِمَا كَسَبَتْ ۚ لَا ظُلْمَ الْيَوْمَ ۚ إِنَّ اللَّهَ سَرِيعُ الْحِسَابِ ﴿17﴾

१८. और उन्हें बहुत क़रीब आने वाली[3] (क़यामत) से आगाह कर दें जबकि दिल गले तक पहुँच जायेंगे और सब शान्त (चुप) होंगे। ज़ालिमों का कोई वली (मित्र) होगा न सिफ़ारिश करने वाला कि जिसकी बात मानी जायेगी।

وَأَنذِرْهُمْ يَوْمَ الْآزِفَةِ إِذِ الْقُلُوبُ لَدَى الْحَنَاجِرِ كَاظِمِينَ ۚ مَا لِلظَّالِمِينَ مِنْ حَمِيمٍ وَلَا شَفِيعٍ يُطَاعُ ﴿18﴾

१९. वह आँखों की बेईमानी को और सीने की छिपी बातों को (अच्छी तरह) जानता है।[4]

يَعْلَمُ خَائِنَةَ الْأَعْيُنِ وَمَا تُخْفِي الصُّدُورُ ﴿19﴾

२०. और अल्लाह (तआला) ठीक-ठीक फ़ैसला कर देगा, और उस के सिवाय जिन्हें ये लोग पुकारते हैं वे किसी बात का भी फ़ैसला नहीं कर सकते, बेशक अल्लाह तआला अच्छी तरह

وَاللَّهُ يَقْضِي بِالْحَقِّ ۖ وَالَّذِينَ يَدْعُونَ مِن دُونِهِ لَا يَقْضُونَ بِشَيْءٍ ۗ إِنَّ اللَّهَ هُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ ﴿20﴾

---

[1] यानी ज़िन्दा होकर क़ब्रों से बाहर निकल खड़े होंगे।

[2] यह क़यामत के दिन अल्लाह तआला (परमेश्वर) पूछेगा जब सभी इन्सान उसके आगे महशर के मैदान (जमा होने की जगह) में खड़े होंगे। अल्लाह तआला धरती को अपनी मुट्ठी और आकाश को अपने दायें हाथ में लपेट लेगा और कहेगा, "राजा मैं हूँ, धरती के राजा कहाँ हैं?" (सहीह बुख़ारी, सूर: ज़ुमर)

[3] آزِفَة (आज़िफ़:) का मतलब है क़रीब आने वाली, यह क़यामत (प्रलय) का नाम है, इसलिए की वह भी क़रीब आने वाली है।

[4] इस में अल्लाह तआला के पूरे इल्म का बयान है कि उसे सभी चीज़ों का इल्म है, छोटी हो या बड़ी, बारीक हो या मोटी, ऊँचे दर्जे की हो या नीचे दर्जे की। इसलिए इन्सान को चाहिए कि उस के इल्म और इहाता की यह हालत है तो उसकी नाफ़रमानी से बचे और सही मानों में उसका डर अपने भीतर पैदा करे, आँखों की बेईमानी चोरी से देखना है, जैसे रास्ता चलते किसी सुंदरी को कंखियों से देखना, सीनों की बातों में वे शक भी आ जाते हैं जो इन्सान के मन में पैदा होती रहती हैं, वह जब तक शक ही रहते हैं यानी एक पल के लिये आते-जाते रहते हैं तब तक तो वह पकड़ के लायक़ नहीं होंगे किन्तु वह जब इरादा का रूप धारण कर लें तो फिर उन पर पकड़ हो सकती है, चाहे उन्हें करने का मौक़ा इन्सान को मिले या न मिले।

सुनने वाला और अच्छी तरह देखने वाला है।

أَوَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ كَانُوا مِن قَبْلِهِمْ ۚ كَانُوا هُمْ أَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَآثَارًا فِي الْأَرْضِ فَأَخَذَهُمُ اللَّهُ بِذُنُوبِهِمْ وَمَا كَانَ لَهُم مِّنَ اللَّهِ مِن وَاقٍ (21)

२१. क्या यह लोग धरती पर चले-फिरे नहीं कि देखते कि जो लोग इन से पहले थे उनका नतीजा कैसा कुछ हुआ? वे ताक़त और क़ूवत और धरती पर अपनी यादगारों की बुनियाद पर इन की अपेक्षा (मुक़ाबिल) ज़्यादा थे, फिर भी अल्लाह ने उन्हें उन के गुनाहों की वजह से पकड़ लिया, और कोई न हुआ जो उन्हें अल्लाह के अज़ाबों से बचा लेता।

ذَٰلِكَ بِأَنَّهُمْ كَانَت تَّأْتِيهِمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ فَكَفَرُوا فَأَخَذَهُمُ اللَّهُ ۚ إِنَّهُ قَوِيٌّ شَدِيدُ الْعِقَابِ (22)

२२. यह इस वजह से कि उन के पास उन के पैग़म्बर चमत्कार (मोजिज़े) ले-ले कर आते थे तो वे इंकार कर देते थे, तो अल्लाह उन्हें पकड़ लेता था। बेशक वह बड़ा ताक़तवर और सख़्त सज़ाओं वाला है।

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا مُوسَىٰ بِآيَاتِنَا وَسُلْطَانٍ مُّبِينٍ (23)

२३. और हम ने मूसा (عليه السلام) को अपनी आयतों (चिन्हों) और वाज़ेह दलीलों के साथ भेजा।[1]

إِلَىٰ فِرْعَوْنَ وَهَامَانَ وَقَارُونَ فَقَالُوا سَاحِرٌ كَذَّابٌ (24)

२४. फ़िरऔन और हामान और क़ारून की तरफ़ तो उन्होंने कहा कि (यह तो) जादूगर और झूठा है।[2]

فَلَمَّا جَاءَهُم بِالْحَقِّ مِنْ عِندِنَا قَالُوا اقْتُلُوا أَبْنَاءَ الَّذِينَ آمَنُوا مَعَهُ وَاسْتَحْيُوا نِسَاءَهُمْ ۚ وَمَا كَيْدُ الْكَافِرِينَ إِلَّا فِي ضَلَالٍ (25)

२५. तो जब उन के पास मूसा (عليه السلام) हमारी तरफ़ से सच्चा (धर्म) लेकर आये तो उन्होंने कहा कि इस के साथ जो ईमानवाले हैं उन के पुत्रों को तो मार डालो और पुत्रियों को ज़िन्दा रखो,[3] और काफ़िरों का जो बहाना है वह

---

[1] आयात से मुराद वह नौ निशानियाँ हैं जिनका बयान पहले किया जा चुका है, या लाठी और रौशन हाथ वाले दो बड़े खुले मोजिज़े हैं। سلطان مبين से मुराद वाज़ेह सबूत और खुली दलीलें (तर्क) हैं जिनका कोई जवाब मुमकिन नहीं था सिवाय ढीटाई और बेशर्मी के।

[2] फ़िरऔन मिश्र (इजिप्ट) के निवासी क़िब्त नाम के जाति का राजा था, बड़ा सख़्त और बेरहम और परमेश्वर होने का दावेदार। उस ने हज़रत मूसा की जाति को दास (ग़ुलाम) बना रखा था और उन पर कई तरह के ज़ुल्म करता था, जैसाकि क़ुरआन की कई जगहों पर उसका बयान है। हामान, फ़िरऔन का मंत्री और ख़ास परामर्श (मश्विरा) देने वाला था और क़ारून वक़्त का बड़ा धनी पुरूष था, उन सभों ने पहले लोगों की तरह अल्लाह के रसूल मूसा को झुठलाया और उन्हें जादूगर और झूठा कहा।

[3] फ़िरऔन यह काम पहले ही कर रहा था ताकि वह बच्चा पैदा ही न हो जो ज्योतिषियों

गुमराही पर ही है।

وَقَالَ فِرْعَوْنُ ذَرُوْنِيْٓ اَقْتُلْ مُوْسٰى وَلْيَدْعُ رَبَّهٗ ۚ اِنِّيْٓ اَخَافُ اَنْ يُّبَدِّلَ دِيْنَكُمْ اَوْ اَنْ يُّظْهِرَ فِي الْاَرْضِ الْفَسَادَ ﴿26﴾

२६. और फ़िरऔन ने कहा कि मुझे छोड़ो कि मैं मूसा को मार डालूं और इसे चाहिए कि अपने रब को पुकारे,[1] मुझे तो डर है कि यह कहीं तुम्हारा दीन न बदल डाले या देश में कोई बहुत बड़ा फ़साद न पैदा कर दे।

وَقَالَ مُوْسٰٓى اِنِّيْ عُذْتُ بِرَبِّيْ وَرَبِّكُمْ مِّنْ كُلِّ مُتَكَبِّرٍ لَّا يُؤْمِنُ بِيَوْمِ الْحِسَابِ ﴿27﴾

२७. और मूसा (ﷺ) ने कहा कि मैं अपने और तुम्हारे रब की पनाह में आता हूं, हर उस घमंडी इंसान (की बुराई) से जो हिसाब (लेखा-जोखा) के दिन पर ईमान नहीं रखता।[2]

وَقَالَ رَجُلٌ مُّؤْمِنٌ ۖ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ يَكْتُمُ اِيْمَانَهٗٓ اَتَقْتُلُوْنَ رَجُلًا اَنْ يَّقُوْلَ رَبِّيَ اللّٰهُ وَقَدْ جَآءَكُمْ بِالْبَيِّنٰتِ مِنْ رَّبِّكُمْ ۭ وَاِنْ يَّكُ كَاذِبًا فَعَلَيْهِ كَذِبُهٗ ۚ وَاِنْ يَّكُ صَادِقًا يُّصِبْكُمْ بَعْضُ الَّذِيْ يَعِدُكُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ كَذَّابٌ ﴿28﴾

२८. और एक ईमानवाले इंसान ने जो फ़िरऔन के परिवार में से था और अपना ईमान छिपाये हुए था, कहा कि क्या तुम एक इंसान को सिर्फ़ इस बात पर क़त्ल करते हो कि वह कहता है कि मेरा रब अल्लाह है और तुम्हारे रब की तरफ़ से वाजेह सुबूत लेकर आया है, अगर वह झूठा है तो उसका झूठ उसी पर है और अगर सच्चा है तो वह जिन (अज़ाबों) का तुम को वादा दे रहा है उस में से कोई न कोई तुम पर आ पड़ेगा। अल्लाह (तआला) उन को मार्गदर्शन (हिदायत) नहीं करता जो हद से

(नजूमियों) की भविष्यवाणी (पेशीनगोई) के ऐतबार से उस के मुल्क के लिए ख़तरा हो सकता था, यह दोबारा हुक्म उस ने हज़रत मूसा के अपमान और बेइज़्ज़ती के लिए दिया।

[1] यह फ़िरऔन की अकड़ का प्रदर्शन (इज़हार) है कि मैं देखूंगा उस का रब उसे कैसे बचाता है, उसे पुकार कर देख ले या रब ही का इंकार है कि उसका कौन सा रब है जो बचा लेगा, क्योंकि वह रब तो ख़ुद ही को कहता था।

[2] ईशदूत मूसा ﷺ को जब यह पता लगा कि फ़िरऔन मुझे क़त्ल कर देना चाहता है तो उन्होंने उसकी बुराई से बचने के लिए अल्लाह से दुआ की। नबी ﷺ को जब दुश्मन से डर होता तो यह दुआ (प्रार्थना) करते।

«اللّٰهُمَّ إِنَّا نَجْعَلُكَ فِي نُحُورِهِمْ وَنَعُوذُ بِكَ مِنْ شُرُورِهِمْ»

"हे अल्लाह! हम तुझ को उन के मुक़ाबिले में करते हैं और उनकी सरकशी से तेरी पनाह चाहते हैं।" (मुसनद अहमद : ४\४१५)

तजावुज़ करने वाले और झूठे हों ।[1]

२९. हे मेरी क़ौम के लोगो! आज तो राज तुम्हारा है कि इस धरती पर तुम ग़ालिब हो, लेकिन अगर अल्लाह (तआला) का अज़ाब हम पर आ गया, तो कौन हमारी मदद करेगा? फ़िरऔन बोला कि मैं तो तुम्हें वही सलाह दे रहा हूँ जो ख़ुद देख रहा हूँ और मैं तो तुम्हें भलाई का रास्ता ही बता रहा हूँ ।

يٰقَوْمِ لَكُمُ الْمُلْكُ الْيَوْمَ ظٰهِرِيْنَ فِي الْاَرْضِ فَمَنْ يَّنْصُرُنَا مِنْ بَاْسِ اللّٰهِ اِنْ جَآءَنَا ۚ قَالَ فِرْعَوْنُ مَآ اُرِيْكُمْ اِلَّا مَآ اَرٰى وَمَآ اَهْدِيْكُمْ اِلَّا سَبِيْلَ الرَّشَادِ ﴿29﴾

३०. और उस ईमानवाले ने कहा कि हे मेरी क़ौम के लोगो! मुझे तो डर है कि तुम पर भी वैसा ही दिन (अज़ाब) न आये जो दूसरे समुदायों (क़ौमों) पर आया ।

وَقَالَ الَّذِيْٓ اٰمَنَ يٰقَوْمِ اِنِّيْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ مِّثْلَ يَوْمِ الْاَحْزَابِ ﴿30﴾

३१. जैसे नूह की क़ौम और आद और समूद और उन के बाद वालों का (हाल हुआ),[2] और अल्लाह अपने बंदों पर किसी तरह का ज़ुल्म करना नहीं चाहता ।[3]

مِثْلَ دَاْبِ قَوْمِ نُوْحٍ وَّعَادٍ وَّثَمُوْدَ وَالَّذِيْنَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ ۭ وَمَا اللّٰهُ يُرِيْدُ ظُلْمًا لِّلْعِبَادِ ﴿31﴾

३२. और हे मेरी क़ौम के लोगो! मुझे तो तुम पर हांक पुकार के दिन का भी डर है ।

وَيٰقَوْمِ اِنِّيْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ يَوْمَ التَّنَادِ ﴿32﴾

३३. जिस दिन तुम पीठ फेर कर लौटोगे, तुम्हें अल्लाह से बचाने वाला कोई न होगा; और जिसे अल्लाह भटका दे उसका रहनुमा कोई नहीं ।

يَوْمَ تُوَلُّوْنَ مُدْبِرِيْنَ ۚ مَا لَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ عَاصِمٍ ۚ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ﴿33﴾

---

[1] इसका मतलब यह है कि अगर वह झूठा होता (जैसाकि तुम यक़ीन दिलाते हो) तो अल्लाह उसे दलीलों और चमत्कारों (मोजिज़े) से सरफ़राज़ न करता, जबकि उस के पास यह चीज़ें मौजूद हैं । दूसरा मतलब है कि अगर वह झूठा है तो अल्लाह तआला ख़ुद ही उसे ज़लील और उसको हलाक कर देगा, तुम्हें उस के विरोध (ख़िलाफ़) में कुछ करने की ज़रूरत नहीं ।

[2] यह बात उस ईमानवाले इंसान ने समझाई और अपनी क़ौम को दोबारा डराया कि अगर अल्लाह के रसूल को झुठलाने पर हम अड़े रहे तो ख़तरा है कि पिछली उम्मतों की तरह अल्लाह के अज़ाब की पकड़ में आ जायेंगे ।

[3] यानी अल्लाह ने जिन्हें भी बरबाद किया उन के गुनाहों के बदले में और रसूलों को झुठलाने और उन के विरोध (मुख़ालफ़त) के सबब ही किया, नहीं तो वह मेहरबान और रहीम रब अपने बंदों पर ज़ुल्म का इरादा ही नहीं करता । क़ौमों की हलाकत (विनाश) बदला के नियम का ज़रूरी नतीजा है जिस से कोई उम्मत या इंसान अलग नहीं है ।

وَلَقَدْ جَآءَكُمْ يُوسُفُ مِن قَبْلُ بِالْبَيِّنَٰتِ فَمَا زِلْتُمْ فِى شَكٍّ مِّمَّا جَآءَكُم بِهِۦ ۖ حَتَّىٰٓ إِذَا هَلَكَ قُلْتُمْ لَن يَبْعَثَ ٱللَّهُ مِنۢ بَعْدِهِۦ رَسُولًا ۚ كَذَٰلِكَ يُضِلُّ ٱللَّهُ مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ مُّرْتَابٌ (34)

३४. और उस से पहले तुम्हारे पास यूसुफ निशानियाँ ले कर आये[1] फिर भी तुम उनकी लायी हुई निशानियों में शक व शुब्हा ही करते रहे, यहाँ तक कि जब उन की मौत हो गयी तो तुम कहने लगे कि उन के बाद तो अल्लाह किसी रसूल को भेजेगा ही नहीं, इसी तरह अल्लाह भटकाता है हर उस इंसान को जो हद से तजावुज़ करने वाला और शक व शुब्हा करने वाला हो।

ٱلَّذِينَ يُجَٰدِلُونَ فِىٓ ءَايَٰتِ ٱللَّهِ بِغَيْرِ سُلْطَٰنٍ أَتَىٰهُمْ ۖ كَبُرَ مَقْتًا عِندَ ٱللَّهِ وَعِندَ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ ۚ كَذَٰلِكَ يَطْبَعُ ٱللَّهُ عَلَىٰ كُلِّ قَلْبِ مُتَكَبِّرٍ جَبَّارٍ (35)

३५. जो बिना किसी सुबूत के जो उन के पास आया हो अल्लाह की आयतों के बारे में झगड़ते हैं,[2] अल्लाह के करीब और ईमानवालों के करीब यह तो बहुत नाराज़गी की चीज़ है। अल्लाह (तआला) इसी तरह हर घमंडी, नाफ़रमानी करने वाले इंसान के दिल पर मोहर लगा देता है।

وَقَالَ فِرْعَوْنُ يَٰهَٰمَٰنُ ٱبْنِ لِى صَرْحًا لَّعَلِّىٓ أَبْلُغُ ٱلْأَسْبَٰبَ (36)

३६. और फ़िरऔन ने कहा कि हे हामान, मेरे लिए एक ऊंची अटारी बना, शायद मैं उन दरवाज़ों तक पहुँच जाऊँ।

أَسْبَٰبَ ٱلسَّمَٰوَٰتِ فَأَطَّلِعَ إِلَىٰٓ إِلَٰهِ مُوسَىٰ وَإِنِّى لَأَظُنُّهُۥ كَٰذِبًا ۚ وَكَذَٰلِكَ زُيِّنَ لِفِرْعَوْنَ سُوٓءُ عَمَلِهِۦ وَصُدَّ عَنِ ٱلسَّبِيلِ ۚ وَمَا كَيْدُ فِرْعَوْنَ إِلَّا فِى تَبَابٍ (37)

३७. जो आकाश के दरवाज़े हैं और मूसा के इलाह (ईश्वर) को झाँक लूँ और मुझ को तो पूरा यक़ीन है कि वह झूठा है, और इसी तरह फ़िरऔन के बुरे काम उसे भले दिखाये गये और रास्ते से रोक दिया गया, और फ़िरऔन का (हर) षड्यन्त्र (साज़िश) तबाही में ही रहा।

وَقَالَ ٱلَّذِىٓ ءَامَنَ يَٰقَوْمِ ٱتَّبِعُونِ أَهْدِكُمْ سَبِيلَ ٱلرَّشَادِ (38)

३८. और उस ईमान वाले इंसान ने कहा कि हे मेरी क़ौम (के लोगो)! तुम (सब) मेरी पैरवी

---

[1] यानी हे मिश्र के निवासियों ईशदूत (पैग़म्बर) मूसा से पहले इसी इलाक़े में जिस में तुम बस रहे हो, ईशदूत यूसुफ भी सुबूतों और दलीलों के साथ आये थे जिस में तुम्हारे बुज़ुर्गों को ईमान की दावत दी गई थी। यानी جاءكم (तुम्हारे पास आये) से मुराद جاء إلى آبائكم (तुम्हारे बुज़ुर्गों के पास आये) हैं।

[2] अल्लाह की तरफ़ से नाज़िल कोई सुबूत उस के पास नहीं है, इस के बावजूद भी अल्लाह की तौहीद और उस के हुक्मों में झगड़ते हैं, जैसाकि हर ज़माने में अंधे पैरोकारों का तरीक़ा रहा है।

करो, मैं नेकी के रास्ते की तरफ़ तुम्हारी हिदायत करूँगा ।[1]

يٰقَوْمِ اِنَّمَا هٰذِهِ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا مَتَاعٌ ؗ وَّاِنَّ الْاٰخِرَةَ هِيَ دَارُ الْقَرَارِ ﴿39﴾

३९. हे मेरे गिरोह के लोगो! यह दुनियावी जिन्दगी फ़ना होने वाले सामान है (यक़ीन करो कि शान्ति) और मुस्तक़िल घर तो आख़िरत ही है ।

مَنْ عَمِلَ سَيِّئَةً فَلَا يُجْزٰۤى اِلَّا مِثْلَهَا ۚ وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓئِكَ يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ يُرْزَقُوْنَ فِيْهَا بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿40﴾

४०. जिस ने गुनाह किया है, उस को तो बराबर का बदला ही है; और जिस ने नेकी की है चाहे वह मर्द हो या औरत और वह ईमानदार हो, तो ये लोग[2] जन्नत में जायेंगे और वहाँ वे हिसाब रोजी (जीविका) पायेंगे ।

وَيٰقَوْمِ مَا لِيْۤ اَدْعُوْكُمْ اِلَى النَّجٰوةِ وَتَدْعُوْنَنِيْۤ اِلَى النَّارِ ﴿41﴾

४१. और हे मेरी जाति के लोगो! यह क्या बात है कि मैं तुम्हें नजात की तरफ़ बुला रहा हूँ, और तुम मुझे नरक की तरफ़ बुला रहे हो ।

تَدْعُوْنَنِيْ لِاَكْفُرَ بِاللّٰهِ وَاُشْرِكَ بِهٖ مَا لَيْسَ لِيْ بِهٖ عِلْمٌ ؗ وَّاَنَا اَدْعُوْكُمْ اِلَى الْعَزِيْزِ الْغَفَّارِ ﴿42﴾

४२. तुम मुझे यह दावत दे रहे हो कि मैं अल्लाह के साथ कुफ़्र करूँ और उस के साथ शिर्क करूँ जिसका कोई इल्म मुझे नहीं; और मैं तुम्हें प्रभावशाली (ग़ालिब), माफ़ करने वाले (उपास्य) की तरफ़ दावत दे रहा हूँ ।

لَا جَرَمَ اَنَّمَا تَدْعُوْنَنِيْۤ اِلَيْهِ لَيْسَ لَهٗ دَعْوَةٌ فِي الدُّنْيَا وَلَا فِي الْاٰخِرَةِ وَاَنَّ مَرَدَّنَاۤ اِلَى اللّٰهِ وَاَنَّ الْمُسْرِفِيْنَ هُمْ اَصْحٰبُ النَّارِ ﴿43﴾

४३. यह निश्चित (यक़ीनी) बात है कि तुम मुझे जिसकी तरफ़ दावत दे रहे हो वह न तो दुनिया में पुकारने के लायक़ है और न आख़िरत में, और यह (भी निश्चित बात है) कि हम सबका लौटना अल्लाह ही की तरफ़ है और हद से गुज़र जाने वाले बेशक नरक वाले हैं ।

[1] फ़िरऔन की जाति में से ईमान लाने वाला फिर बोला और कहा कि दावा तो फ़िरऔन भी करता है कि मैं तुम्हें सीधे रास्ते पर चला रहा हूँ, लेकिन हक़ीक़त यह है कि फ़िरऔन रास्ते से गुमराह है । मैं जिस रास्ते का निशान बता रहा हूँ वह सीधा रास्ता है, जिसकी तरफ़ तुम्हें ईशदूत मूसा عليه السلام बुला रहे हैं ।

[2] यानी वह जो ईमानदार भी होंगे और अच्छे आमाल (कर्मों) के पालन करने वाले भी, उसका खुला मतलब यह है कि नेकी के बिना ईमान या ईमान के बिना नेकी का अल्लाह के क़रीब कोई मूल्य (क़ीमत) नहीं होगा । अल्लाह के पास कामयाबी के लिए ईमान के साथ नेकी और नेकी के साथ ईमान ज़रूरी है ।

فَسَتَذْكُرُونَ مَآ أَقُولُ لَكُمْ ۚ وَأُفَوِّضُ أَمْرِيٓ إِلَى ٱللَّهِ ۚ إِنَّ ٱللَّهَ بَصِيرٌۢ بِٱلْعِبَادِ ﴿44﴾

४४. तो आगे चलकर तुम मेरी बातों को याद करोगे, मैं अपना मामला अल्लाह के हवाले करता हूं। बेशक अल्लाह (तआला) बन्दों को देखने वाला है।

فَوَقَىٰهُ ٱللَّهُ سَيِّـَٔاتِ مَا مَكَرُوا۟ ۖ وَحَاقَ بِـَٔالِ فِرْعَوْنَ سُوٓءُ ٱلْعَذَابِ ﴿45﴾

४५. तो उसे अल्लाह (तआला) ने सभी बुराईयों से महफ़ूज रख लिया जो उन लोगों ने सोच रखा था, और फ़िरऔन के पैरोकारों पर बुरी तरह का अजाब टूट पड़ा।

ٱلنَّارُ يُعْرَضُونَ عَلَيْهَا غُدُوًّا وَعَشِيًّا ۖ وَيَوْمَ تَقُومُ ٱلسَّاعَةُ أَدْخِلُوٓا۟ ءَالَ فِرْعَوْنَ أَشَدَّ ٱلْعَذَابِ ﴿46﴾

४६. आग है जिस के सामने ये हर सुबह और शाम को लाये जाते हैं;[1] और जिस दिन क़यामत क़ायम होगी (हुक्म होगा कि) फ़िरऔन के पैरोकारों को बहुत सख़्त अजाब में डालो।[2]

---

[1] इस आग पर "बर्जख़" में यानी क़ब्रों में वे लोग हमेशा सुबह और शाम पेश किये जाते हैं, जिस से क़ब्र का अजाब साबित होता है, जिसका कुछ लोग इंकार करते हैं। हदीसों में तो बड़ी तफ़सील से क़ब्र के अजाब पर रौशनी डाली गई है। जैसे हजरत आयेशा (رضی اللہ عنہا) के सवाल के जवाब में नबी ﷺ ने फ़रमाया :

"نَعَمْ، عَذَابُ الْقَبْرِ حَقٌّ"

"हाँ, क़ब्र का अजाब सच है।" (सहीह बुख़ारी, किताबुल जनायज, बाबु माजाअ फी अज़ाबिल क़ब्रे)

इसी तरह एक दूसरी हदीस में फ़रमाया गया :

"जब तुम में से कोई मरता है तो (क़ब्र में) सुबह-शाम उसका स्थान पेश किया जाता है।" यानी अगर वह जन्नत का हक़दार है तो जन्नत और जहन्नम का हक़दार हो तो जहन्नम उस के सामने पेश की जाती है और कहा जाता है कि यह तेरा मुस्तक़िल मकान है, जहाँ क़यामत के दिन अल्लाह तआला तुझे भेजेगा। (सहीह बुख़ारी, बाबुल मय्यते युअ्रजु अलैहि मक़अदोहू बिल ग़दाते वल अशीये, मुस्लिम किताबुल जन्नते, बाबु अर्जे मक़अदिल मय्यते)

इसका मतलब यह है कि जो क़ब्र के अजाब का इंकार करते हैं, वह क़ुरआन और हदीस दोनों की व्याख्या (तफ़सीर) को नहीं मानते।

[2] इससे पहले साफ़ है कि आग पर पेश किये जाने का मामला जो सुबह-शाम होता है, क़यामत के पहले बर्जख़ व क़ब्र ही की जिन्दगी है, क़यामत के दिन उनको क़ब्र से निकालकर कड़े अजाब यानी नरक में डाल दिया जायेगा। 'आले फ़िरऔन' से मुराद ख़ुद फ़िरऔन, उसकी क़ौम और उस के सभी पैरोकार हैं। यह कहना कि हमें तो क़ब्र में मुर्दा आराम से पड़ा दिखाई देता है, उसे अगर अजाब हो तो इस हालत में दिखाई न दे, बकवास है क्योंकि अजाब के लिए यह जरूरी नहीं कि हमें दिखाई भी पड़े, अल्लाह हर तरह से अजाब देने पर क़ादिर है। क्या हम देखते नहीं कि एक इंसान सपने में बहुत दुखद दृश्य (मंजर) देख कर बड़ी बेचैनी और दुख का एहसास करता है, लेकिन देखने वाले को जरा एहसास नहीं होता कि यह सोया इंसान सख़्त दुख में है।

وَ إِذْ يَتَحَآجُّوْنَ فِى النَّارِ فَيَقُوْلُ الضُّعَفٰٓؤُا لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا فَهَلْ اَنْتُمْ مُّغْنُوْنَ عَنَّا نَصِيْبًا مِّنَ النَّارِ ﴿47﴾

४७. और जबकि नरक में एक-दूसरे से झगड़ेंगे तो कमजोर लोग बड़े लोगों से (जिन के ये ताबे थे) कहेंगे कि हम तो तुम्हारे पैरोकार थे तो क्या अब तुम हम से इस आग का कोई हिस्सा हटा सकते हो?

قَالَ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا كُلٌّ فِيْهَآ اِنَّ اللّٰهَ قَدْ حَكَمَ بَيْنَ الْعِبَادِ ﴿48﴾

४८. वे बड़े लोग जवाब देंगे कि हम तो सभी इसी आग में हैं, अल्लाह (तआला) अपने बंदों के बीच फ़ैसला कर चुका है।

وَقَالَ الَّذِيْنَ فِى النَّارِ لِخَزَنَةِ جَهَنَّمَ ادْعُوْا رَبَّكُمْ يُخَفِّفْ عَنَّا يَوْمًا مِّنَ الْعَذَابِ ﴿49﴾

४९. और सभी नरकवासी (जमा होकर) नरक के रक्षकों (मुहाफ़िज़ों) से कहेंगे कि तुम ही अपने रब से दुआ करो कि वह किसी दिन भी हमारे अजाब में कमी कर दे।

قَالُوْٓا اَوَلَمْ تَكُ تَاْتِيْكُمْ رُسُلُكُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ۭ قَالُوْا بَلٰى ۭ قَالُوْا فَادْعُوْا ۚ وَمَا دُعٰٓؤُا الْكٰفِرِيْنَ اِلَّا فِىْ ضَلٰلٍ ﴿50﴾

५०. वे जवाब देंगे कि क्या तुम्हारे पास तुम्हारे रसूल चमत्कार (मोजिज़े) लेकर नहीं आये थे, वे कहेंगे कि क्यों नहीं। वे कहेंगे कि फिर तुम ही दुआ करो और काफ़िरों की दुआ सिर्फ़ (बेअसर और) बेकार है।

اِنَّا لَنَنْصُرُ رُسُلَنَا وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَيَوْمَ يَقُوْمُ الْاَشْهَادُ ﴿51﴾

५१. यक़ीनन हम अपने रसूलों की और ईमान वालों की दुनियावी ज़िन्दगी में भी मदद करेंगे और उस दिन भी जब गवाही देने वाले खड़े होंगे।

يَوْمَ لَا يَنْفَعُ الظّٰلِمِيْنَ مَعْذِرَتُهُمْ وَلَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوْٓءُ الدَّارِ ﴿52﴾

५२. जिस दिन ज़ालिमों की विवशता (बहाना) कुछ फ़ायेदा न देगी और उन के लिए धिक्कार (लानत) ही होगी और उन के लिए बुरा घर होगा।

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْهُدٰى وَاَوْرَثْنَا بَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ الْكِتٰبَ ﴿53﴾

५३. और हम ने मूसा को हिदायत अता की और इस्राईल की औलाद को इस किताब का उत्तराधिकारी (वारिस) बनाया।

هُدًى وَّذِكْرٰى لِاُولِى الْاَلْبَابِ ﴿54﴾

५४. कि वह हिदायत और नसीहत थी बुद्धिमानों (अक़्लमंदों) के लिए।

इस के बावजूद भी क़ब्र के अजाब का इंकार सिर्फ़ हठधर्मी है, बल्कि बेदारी की हालत में भी इंसान को जो तकलीफ़ें होती हैं वह ख़ुद जाहिर नहीं होती बल्कि केवल इंसान का तड़पना और तिलमिलाना जाहिर होता है, और यह भी उस हालत में जब वह तड़पे और तिलमिलाये।

फَاصْبِرْ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ وَاسْتَغْفِرْ لِذَنْبِكَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ بِالْعَشِيِّ وَالْإِبْكَارِ ﴿55﴾

५५. तो (हे नबी!) तू सब्र कर। अल्लाह का वादा (बेशक) सच्चा ही है, तू अपने गुनाहों की माफ़ी माँगता रह[1] और सुबह-शाम[2] अपने रब की तस्बीह और महिमागान करता रह।

إِنَّ الَّذِينَ يُجَادِلُونَ فِي آيَاتِ اللَّهِ بِغَيْرِ سُلْطَانٍ أَتَاهُمْ ۙ إِن فِي صُدُورِهِمْ إِلَّا كِبْرٌ مَّا هُم بِبَالِغِيهِ ۚ فَاسْتَعِذْ بِاللَّهِ ۖ إِنَّهُ هُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ ﴿56﴾

५६. बेशक जो लोग अपने पास किसी सुबूत के न होने के बावजूद अल्लाह की आयतों में झगड़ते हैं; उन के दिलों में बड़ाई के सिवाय दूसरे कुछ नहीं जो इस बड़ाई तक पहुँचने वाले नहीं, तो तू अल्लाह की पनाह माँगता रह, बेशक वह पूरी तरह से सुनने वाला और सब से ज़्यादा देखने वाला है।

لَخَلْقُ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ أَكْبَرُ مِنْ خَلْقِ النَّاسِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ﴿57﴾

५७. आकाशों और धरती की पैदाईश बेशक इंसानों की पैदाईश से बहुत बड़ा काम है, लेकिन (यह दूसरी बात है कि) ज़्यादातर लोग जानते नहीं हैं।

وَمَا يَسْتَوِي الْأَعْمَىٰ وَالْبَصِيرُ وَالَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ وَلَا الْمُسِيءُ ۚ قَلِيلًا مَّا تَتَذَكَّرُونَ ﴿58﴾

५८. और अंधा और देखने वाला बराबर नहीं; न वे लोग जो ईमान लाये और भले काम किये कुकर्मियों के (समान हैं)[3] तुम (बहुत) कम नसीहत हासिल कर रहे हो।

إِنَّ السَّاعَةَ لَآتِيَةٌ لَّا رَيْبَ فِيهَا وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿59﴾

५९. क़यामत निश्चय (यक़ीनन) और बेशक आने वाली है, लेकिन (यह दूसरी बात है कि) ज़्यादातर लोग ईमान नहीं लाते।

[1] गुनाह से मुराद वह तनिक-तनिक सी भूल-चूक है जो इंसानी फ़ितरत (प्रकृति) के सबब हो जाती है, जिसका सुधार भी अल्लाह की तरफ़ से कर दिया जाता है या इस्तिग़फ़ार (क्षमा माँगना) भी एक इबादत ही है। नेकी और बदला में अधिकता के लिए (क्षमा माँगने) का हुक्म दिया गया है, या मुराद पैरोकारों को हिदायत देना है कि वह तौबा से बेपरवाह न हों।

[2] عَشِي (अशी) से दिन का आख़िर और रात का शुरूआती हिस्सा और إبكار (इबकार) से रात का आख़िरी और दिन का शुरूआती हिस्सा मुराद है।

[3] मतलब यह है कि जिस तरह अंधा और आँख वाला बराबर नहीं, उसी तरह ईमानदार और काफ़िर, नेक लोग और बुरे लोग बराबर नहीं, बल्कि क़यामत के दिन उन के बीच जो बड़ा फ़र्क होगा वह बिल्कुल खुल कर सामने आ जायेगा।

وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُونِيٓ أَسْتَجِبْ لَكُمْ ۚ إِنَّ الَّذِينَ يَسْتَكْبِرُونَ عَنْ عِبَادَتِي سَيَدْخُلُونَ جَهَنَّمَ دَاخِرِينَ ﴿60﴾

६०. और तुम्हारे रब का हुक्म (लागू हो चुका) है कि मुझ से दुआ करो मैं तुम्हारी दुआवों को क़ुबूल करूँगा। यक़ीन करो कि जो लोग मेरी इबादत से तकब्बुर करते हैं वे जल्द ही रुस्वा (अपमानित) होकर नरक में पहुँच जायेंगे।[1]

اللَّهُ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ اللَّيْلَ لِتَسْكُنُوا فِيهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ۚ إِنَّ اللَّهَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَشْكُرُونَ ﴿61﴾

६१. अल्लाह (तआला) ने तुम्हारे लिए रात बना दी है कि तुम उस में आराम कर सको और दिन को दिखलाने वाला बना दिया। बेशक अल्लाह (तआला) लोगों पर उपकार (फ़ज़्ल) और रहम करने वाला है, लेकिन ज़्यादातर लोग शुक्रिया अदा नहीं करते।

ذَٰلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ لَّا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ ۖ فَأَنَّىٰ تُؤْفَكُونَ ﴿62﴾

६२. यही अल्लाह है तुम सबका पालन-पोषण करने वाला, हर चीज़ का ख़ालिक़ (सृष्टा), उस के सिवाय कोई सच्चा माबूद नहीं; फिर किस तरफ़ तुम फिरे जाते हो?

كَذَٰلِكَ يُؤْفَكُ الَّذِينَ كَانُوا بِآيَاتِ اللَّهِ يَجْحَدُونَ ﴿63﴾

६३. उसी तरह वे लोग भी फेरे जाते रहे जो अल्लाह की आयतों का इंकार करते थे।

اللَّهُ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ قَرَارًا وَالسَّمَاءَ بِنَاءً وَصَوَّرَكُمْ فَأَحْسَنَ صُوَرَكُمْ وَرَزَقَكُم مِّنَ الطَّيِّبَاتِ ۚ ذَٰلِكُمُ اللَّهُ رَبُّكُمْ ۖ فَتَبَارَكَ اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ﴿64﴾

६४. अल्लाह ही है जिस ने तुम्हारे लिए धरती को रहने की जगह और आकाश को छत बना दिया, और तुम्हारा रूप दिया और बहुत अच्छा बनाया[2] और तुम्हें बहुत अच्छी चीज़ें खाने के लिए दीं।[3] वही अल्लाह तुम्हारा रब है; तो बहुत शुभ (बाबरकत) अल्लाह है सारी दुनिया का रब।

هُوَ الْحَيُّ لَا إِلَٰهَ إِلَّا هُوَ فَادْعُوهُ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ ۗ الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿65﴾

६५. वह ज़िन्दा है जिस के सिवाय कोई सच्चा माबूद नहीं तो तुम इख़्लास से उसी की इबादत करते हुए उसे पुकारो, सभी तारीफ़ अल्लाह ही के लिए है जो सारी दुनिया का रब है।

---

[1] यह अल्लाह की इबादत से इंकार और मुँह मोड़ने और उस में दूसरों को भी साझी बनाने वालों का बुरा नतीजा है।

[2] जितने भी ज़मीन पर प्राणी (जानदार) हैं उन सब में तुम इन्सानों को सब से सुन्दर और संतुलित अंगों (मुनासिब जिस्म) का बनाया।

[3] कई तरह के खाने तुम्हारे लिए सुलभ (मुहय्या) कराये जो मज़ेदार भी हैं और ताक़त वाले भी।

قُلْ إِنِّي نُهِيتُ أَنْ أَعْبُدَ الَّذِينَ تَدْعُونَ مِن دُونِ اللَّهِ لَمَّا جَاءَنِيَ الْبَيِّنَاتُ مِن رَّبِّي وَأُمِرْتُ أَنْ أُسْلِمَ لِرَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿66﴾

६६. (आप) कह दीजिए कि मुझे उनकी इबादत करने से रोक दिया गया है जिन्हें तुम अल्लाह के सिवाय पुकार रहे हो,[1] इस बिना पर कि मेरे पास मेरे रब के सुबूत पहुँच चुके हैं, मुझे यह हुक्म दिया गया है कि मैं सारी दुनिया के रब के हुक्म के अधीन (मातहत) हो जाऊँ।

هُوَ الَّذِي خَلَقَكُم مِّن تُرَابٍ ثُمَّ مِن نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ يُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوا أَشُدَّكُمْ ثُمَّ لِتَكُونُوا شُيُوخًا وَمِنكُم مَّن يُتَوَفَّىٰ مِن قَبْلُ وَلِتَبْلُغُوا أَجَلًا مُّسَمًّى وَلَعَلَّكُمْ تَعْقِلُونَ ﴿67﴾

६७. वही है जिस ने तुम्हें मिट्टी से, फिर वीर्य (नुतफ़ा) से, फिर ख़ून के लोथड़े से पैदा किया, फिर तुम्हें बच्चा बनाकर निकालता है, फिर (तुम्हें बढ़ाता है कि) तुम अपनी पूरी ताक़त को पहुँच जाओ फिर बूढ़े बन जाओ,[2] और तुम में से कुछ की इस से पहले ही मौत हो जाती है,[3] (और वह तुम्हें छोड़ देता है) ताकि तुम मुक़र्रर उम्र तक पहुँच जाओ[4] और ताकि तुम सोच समझ लो।

هُوَ الَّذِي يُحْيِي وَيُمِيتُ فَإِذَا قَضَىٰ أَمْرًا فَإِنَّمَا يَقُولُ لَهُ كُن فَيَكُونُ ﴿68﴾

६८. वही है जो ज़िन्दगी और मौत देता है,[5] फिर जब वह किसी काम के करने का फ़ैसला करता है तो उसे केवल यह कहता है कि 'हो जा' बस वह हो जाता है।

---

[1] चाहे वह पत्थर की मूर्तियाँ हो, अम्बिया और औलिया हों और समाधियों (क़ब्रों) में गड़े इंसान हों, मदद के लिए किसी को न पुकारो, उन के नामों के चढ़ावे न चढ़ाओ, उन का वज़ीफ़ा न पढ़ो, उन का डर न खाओ और न उन से उम्मीदें बाँधो, क्योंकि यह इबादत के भेद (क़िस्म) हैं जो सिर्फ़ एक अल्लाह का हक़ है।

[2] यानी इन सभी हालतों और अवस्थाओं (मरहलों) से गुज़ारने वाला वही है जिसका कोई साझी नहीं।

[3] यानी माँ के गर्भाशय (रिहम) में कई अवस्थाओं से गुज़र कर बाहर आने से पहले ही माँ के पेट में कुछ बचपन में, कुछ जवानी में और कुछ बुढ़ापे से पहले अधेड़ उम्र में मर जाते हैं।

[4] यानी अल्लाह तआला (परमेश्वर) यह इसलिए करता है ताकि जिसकी जितनी उम्र अल्लाह ने लिख दी है, वह उसको पहुँच जाये और दुनिया में उतनी ज़िन्दगी गुज़ारे।

[5] ज़िन्दगी देना और मारना उसी के हाथ में है, वह एक निर्जीव वीर्य (बेजान नुतफ़ा) को कई हालतों से गुज़ार कर एक ज़िन्दा इंसान के रूप में ढाल देता है और फिर एक मुक़र्रर वक़्त के बाद इंसान को मारकर मौत की वादियों में सुला देता है।

६९. क्या तूने उन्हें नहीं देखा जो अल्लाह की आयतों में झगड़ते हैं, कि वे कहाँ फेर दिये जाते हैं।

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ يُجَادِلُونَ فِي آيَاتِ اللَّهِ أَنَّىٰ يُصْرَفُونَ ﴿69﴾

७०. जिन लोगों ने किताब को झुठलाया और उसे भी जो हम ने अपने रसूलों के साथ भेजा, उन्हें बहुत जल्द हक़ीक़त का इल्म (ज्ञान) हो जायेगा।

الَّذِينَ كَذَّبُوا بِالْكِتَابِ وَبِمَا أَرْسَلْنَا بِهِ رُسُلَنَا ۖ فَسَوْفَ يَعْلَمُونَ ﴿70﴾

७१. जबकि उनकी गर्दनों में तौक़ होंगे और जंजीरें होंगी, घसीटे जायेंगे।

إِذِ الْأَغْلَالُ فِي أَعْنَاقِهِمْ وَالسَّلَاسِلُ يُسْحَبُونَ ﴿71﴾

७२. खौलते हुए पानी में, और फिर नरक की आग में जलाये जायेंगे।

فِي الْحَمِيمِ ثُمَّ فِي النَّارِ يُسْجَرُونَ ﴿72﴾

७३. फिर उन से पूछा जायेगा कि जिन्हें तुम साझीदार ठहराते थे वे कहाँ हैं?

ثُمَّ قِيلَ لَهُمْ أَيْنَ مَا كُنْتُمْ تُشْرِكُونَ ﴿73﴾

७४. जो अल्लाह (तआला) के सिवाय थे, वे कहेंगे कि वे हम से खो गये बल्कि हम तो इस से पहले किसी को भी पुकारते ही न थे। अल्लाह (तआला) काफ़िरों को इसी तरह भटकाता है।

مِنْ دُونِ اللَّهِ ۖ قَالُوا ضَلُّوا عَنَّا بَلْ لَمْ نَكُنْ نَدْعُو مِنْ قَبْلُ شَيْئًا ۚ كَذَٰلِكَ يُضِلُّ اللَّهُ الْكَافِرِينَ ﴿74﴾

७५. यह (बदला) है उस चीज़ का जो तुम धरती पर नाहक़ (अनुचित) फूले न समाते थे और (बेकार) इतराते फिरते थे।

ذَٰلِكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَفْرَحُونَ فِي الْأَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَبِمَا كُنْتُمْ تَمْرَحُونَ ﴿75﴾

७६. (अब आओ) नरक में हमेशा रहने के लिए (उस के) दरवाज़ों में चले जाओ; क्या ही बुरी जगह है अहंकार (तकब्बुर) करने वालों के लिए।

ادْخُلُوا أَبْوَابَ جَهَنَّمَ خَالِدِينَ فِيهَا ۖ فَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِينَ ﴿76﴾

७७. तो आप सब्र करें, अल्लाह का वादा पूरी तरह से सच्चा है, उन्हें हम ने जो वादा दे रखे हैं उन में से कुछ हम आप को दिखायें, या उस से पहले आप को मौत देंगे, उनका लौटाया जाना तो हमारी ही तरफ़ है।

فَاصْبِرْ إِنَّ وَعْدَ اللَّهِ حَقٌّ ۚ فَإِمَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِي نَعِدُهُمْ أَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَإِلَيْنَا يُرْجَعُونَ ﴿77﴾

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّن قَبْلِكَ مِنْهُم مَّن قَصَصْنَا عَلَيْكَ وَمِنْهُم مَّن لَّمْ نَقْصُصْ عَلَيْكَ ۗ وَمَا كَانَ لِرَسُولٍ أَن يَأْتِيَ بِآيَةٍ إِلَّا بِإِذْنِ اللَّهِ ۚ فَإِذَا جَاءَ أَمْرُ اللَّهِ قُضِيَ بِالْحَقِّ وَخَسِرَ هُنَالِكَ الْمُبْطِلُونَ ﴿78﴾

७८. बेशक हम आप से पहले भी बहुत से रसूल भेज चुके हैं, जिन में से कुछ के (वाक़ेआत) हम आप को सुना चुके हैं और उन में से कुछ की कथायें तो हम ने आप को सुनायी ही नहीं, और किसी रसूल के (वश में यह) न था कि कोई मोजिज़ा अल्लाह की इजाज़त के बिना ला सके,[1] फिर जिस समय अल्लाह का हुक्म आयेगा सच्चाई के साथ फ़ैसला कर दिया जायेगा और उस जगह पर असत्यवादी (झूठे) लोग नुक़सान में रह जायेंगे।

اللَّهُ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَنْعَامَ لِتَرْكَبُوا مِنْهَا وَمِنْهَا تَأْكُلُونَ ﴿79﴾

७९. अल्लाह वह है जिस ने तुम्हारे लिए पशु (चौपाये) पैदा किये[2] जिन में से कुछ पर तुम सवार होते हो और कुछ को तुम खाते हो।

وَلَكُمْ فِيهَا مَنَافِعُ وَلِتَبْلُغُوا عَلَيْهَا حَاجَةً فِي صُدُورِكُمْ وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلْكِ تُحْمَلُونَ ﴿80﴾

८०. और दूसरे भी तुम्हारे लिए उस में बहुत से फ़ायदे हैं ताकि अपने दिल में छिपी हुई ज़रूरतों को उन्हीं पर सवारी कर के तुम हासिल कर लो, और इन जानवरों पर और नावों पर तुम सवार कराये जाते हो।

وَيُرِيكُمْ آيَاتِهِ فَأَيَّ آيَاتِ اللَّهِ تُنكِرُونَ ﴿81﴾

८१. और (अल्लाह) तुम्हें अपनी निशानियाँ दिखाता जा रहा है, तो तुम अल्लाह की किन-किन निशानियों को इंकार करते रहोगे।

---

[1] آیت (आयत) से मुराद यहाँ मोजिज़ा और ख़िलाफ़ आदत वाक़िआ है जो पैग़म्बर की सच्चाई को साबित करे। काफ़िर रसूलों से माँग करते रहे कि हमें फ़लाँ-फ़लाँ चीज़ दिखाओ, जैसे ख़ुद आख़िरी रसूल (ﷺ) से मक्का के काफ़िरों ने कई चीज़ों की माँग की, जिसका बयान सूर: बनी इस्राईल ९० से ९३ तक में मौजूद है। अल्लाह तआला फ़रमा रहा है कि किसी पैग़म्बर के बस में यह नहीं था कि वह अपनी जातियों की माँग पर ख़ुद कोई मोजिज़ा बनाकर दिखा सके, यह सिर्फ़ हमारे अधिकार (बस) में था।

[2] अल्लाह अपने अनगिनत नेमतों में से कुछ की चर्चा कर रहा है। चौपाये (पशु) से मुराद ऊँट, गाय, बकरी और भेड़ हैं। यह नर-मादा मिलकर आठ हैं, जैसा कि सूर: अल-अन्आम -१४३ और १४४ में है।

أَفَلَمْ يَسِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَيَنظُرُوا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِينَ مِن قَبْلِهِمْ ۚ كَانُوا أَكْثَرَ مِنْهُمْ وَأَشَدَّ قُوَّةً وَآثَارًا فِي الْأَرْضِ فَمَا أَغْنَىٰ عَنْهُم مَّا كَانُوا يَكْسِبُونَ (82)

८२. या उन्होंने धरती पर सैर करके अपने से पहले के लोगों का नतीजा नहीं देखा जो इन से तादाद में ज़्यादा थे, ताक़त में सख़्त और धरती में बहुत सारी यादगारें छोड़ी थीं। (लेकिन) उन के किये कामों ने उन्हें ज़रा भी फ़ायेदा नहीं पहुँचाया।

فَلَمَّا جَاءَتْهُمْ رُسُلُهُم بِالْبَيِّنَاتِ فَرِحُوا بِمَا عِندَهُم مِّنَ الْعِلْمِ وَحَاقَ بِهِم مَّا كَانُوا بِهِ يَسْتَهْزِئُونَ (83)

८३. तो जब कभी उन के पास उन के रसूल वाज़ेह निशानियाँ लेकर आये तो यह अपने पास के ज्ञान (इल्म) पर इतराने लगे, आख़िर में जिस चीज़ को मज़ाक़ में उड़ा रहे थे वही उन पर उलट पड़ी।

فَلَمَّا رَأَوْا بَأْسَنَا قَالُوا آمَنَّا بِاللَّهِ وَحْدَهُ وَكَفَرْنَا بِمَا كُنَّا بِهِ مُشْرِكِينَ (84)

८४. फिर हमारी यातना (अज़ाब) देखते ही कहने लगे कि अल्लाह एक पर हम ईमान लाये और जिन-जिन को हम उसका साझीदार बना रहे थे, हम ने उन सब से इंकार किया।

فَلَمْ يَكُ يَنفَعُهُمْ إِيمَانُهُمْ لَمَّا رَأَوْا بَأْسَنَا ۖ سُنَّتَ اللَّهِ الَّتِي قَدْ خَلَتْ فِي عِبَادِهِ ۖ وَخَسِرَ هُنَالِكَ الْكَافِرُونَ (85)

८५. लेकिन हमारी यातना (अज़ाब) को देख लेने के बाद उन के ईमान ने उन्हें फ़ायेदा न दिया। अल्लाह ने अपना यही क़ानून मुक़र्रर कर रखा है जो उस के बन्दों में लगातार चला आ रहा है;[1] और उस जगह पर काफ़िर ख़राब (और कमज़ोर) हुए।

سُورَةُ حٰمٓ السَّجْدَة

सूरतु हा॰ मीम॰ अस्सज्द:-४१

सूर: हा॰मीम॰अस्सज्द:* मक्का में नाज़िल हुई और इन में चौवन आयतें और छ: रूकूअ हैं।

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ

अल्लाह के नाम से शुरू करता हूं, जो बड़ा मेहरबान और रहम करने वाला है।

حمٓ (1)

१. हा॰मीम॰,

[1] यानी यह अल्लाह का क़ानून चला आ रहा है कि अज़ाब देखने के बाद तौबा (पश्चाताप) और ईमान क़ुबूल नहीं। यह विषय क़ुरआन के कई मुक़ामों में बयान हुआ है।

* इस सूर: का दूसरा नाम "फ़ुस्सेलत" है, इस के नाज़िल होने के बारे में मक्का के सरदार उत्बा बिन रबीआ के साथ आप (ﷺ) की मशहूर घटना (वाक़ेआ) है। (इब्ने कसीर)

تَنْزِيلٌ مِّنَ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيمِ ﴿2﴾

२. उतरी है बड़े कृपालु (रहमान) बड़े दयालु (रहीम) की तरफ़ से ।

كِتٰبٌ فُصِّلَتْ اٰيٰتُهٗ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا لِّقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿3﴾

३. (ऐसी) किताब है जिसकी आयतों (सूत्रों) की वाज़ेह तफ़सील की गयी है, (इस हालत में कि) क़ुरआन अरबी भाषा (ज़बान) में है उस क़ौम के लिए जो जानती है ।

بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا ۚ فَاَعْرَضَ اَكْثَرُهُمْ فَهُمْ لَا يَسْمَعُوْنَ ﴿4﴾

४. ख़ुशख़बरी सुनाने वाला और डराने वाला है, फिर भी उन के ज़्यादातर ने मुँह मोड़ लिया और वे सुनते ही नहीं ।

وَقَالُوْا قُلُوْبُنَا فِيْٓ اَكِنَّةٍ مِّمَّا تَدْعُوْنَآ اِلَيْهِ وَفِيْٓ اٰذَانِنَا وَقْرٌ وَّمِنْۢ بَيْنِنَا وَبَيْنِكَ حِجَابٌ فَاعْمَلْ اِنَّنَا عٰمِلُوْنَ ﴿5﴾

५. और उन्होंने कहा कि तू जिसकी तरफ़ हमें बुला रहा है हमारे दिल तो उस से पर्दे में हैं,[1] हमारे कानों में बोझ है (या कुछ सुनायी नही देता)[2] और हम में और तुझ में एक पर्दा (आड़) है । अच्छा, तू अब अपना काम किये जा हम भी बेशक काम करने वाले हैं ।

قُلْ اِنَّمَآ اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوْحٰٓى اِلَيَّ اَنَّمَآ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ فَاسْتَقِيْمُوْٓا اِلَيْهِ وَاسْتَغْفِرُوْهُ ۗ وَوَيْلٌ لِّلْمُشْرِكِيْنَ ﴿6﴾

६. (आप) कह दीजिए कि मैं तो तुम ही जैसा इंसान हूँ, मुझ पर वह्यी की जाती है कि तुम सबका माबूद सिर्फ़ एक अल्लाह ही है, तो तुम उस की तरफ़ ध्यान केन्द्रित (मरकूज़) कर लो और उस से गुनाहों की माफ़ी चाहो, और उन मूर्तिपूजकों के लिए (बड़ी ही) ख़राबी है ।

الَّذِيْنَ لَا يُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿7﴾

७. जो ज़कात नहीं देते[3] और आख़िरत का भी इंकार करने वाले ही रहते हैं ।

---

[1] اَكِنَّة (अकिन्नह) كِنَان (किनान) का बहुवचन (जमा) है पर्दा, यानी हमारे दिल इस बात से पर्दों में हैं कि हम तेरी तौहीद (अद्वैत) और ईमान की दावत को समझ सकें ।

[2] وَقْر (वक़्र) का लफ़्ज़ी मायेना बोझ है, यहाँ मुराद बहरापन है जो सच सुनने में रूकावट था ।

[3] यह सूरः मक्का में नाज़िल हुई । ज़कात (धर्मदान) हिजरत के दूसरे साल फ़र्ज़ हुई, इसलिए इस से मुराद या तो दान है जिसका हुक्म मुसलमानों को मक्के में भी दिया जाता रहा, जिस तरह पहले सिर्फ़ सुबह और शाम की नमाज़ों का हुक्म था, दोबारा हिजरत से डेढ़ साल पहले मेराज की रात को पाँच फ़र्ज़ नमाज़ों का हुक्म हुआ, या ज़कात से यहाँ मुराद कलमए शहादत है जिस से इंसानी मन शिर्क की गन्दगियों से पाक हो जाता है । (इब्ने कसीर)

إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا الصَّالِحَاتِ لَهُمْ أَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُونٍ ﴿8﴾

८. बेशक जो लोग ईमान लायें और अच्छे अमल करें उन के लिए बेइन्तेहा बदला है।

قُلْ أَئِنَّكُمْ لَتَكْفُرُونَ بِالَّذِي خَلَقَ الْأَرْضَ فِي يَوْمَيْنِ وَتَجْعَلُونَ لَهُ أَنْدَادًا ۚ ذَٰلِكَ رَبُّ الْعَالَمِينَ ﴿9﴾

९. (आप) कह दीजिए कि क्या तुम उस (अल्लाह) का इंकार करते हो और तुम उस के साझीदार मुक़र्रर करते हो जिस ने दो दिन में धरती को पैदा किया, सारे जहाँ का रब वही है।

وَجَعَلَ فِيهَا رَوَاسِيَ مِنْ فَوْقِهَا وَبَارَكَ فِيهَا وَقَدَّرَ فِيهَا أَقْوَاتَهَا فِي أَرْبَعَةِ أَيَّامٍ سَوَاءً لِلسَّائِلِينَ ﴿10﴾

१०. और उस ने धरती में उस के ऊपर से ही पहाड़ गाड़ दिये, उस में बरकत अता कर दी और उस में रहने वालों के आहार (रिज़्क़) का भी अंदाजा उसी में कर दिया[1] केवल चार दिन में ही, सवाल करने वालों के लिये बराबर तरीक़े से।[2]

ثُمَّ اسْتَوَىٰ إِلَى السَّمَاءِ وَهِيَ دُخَانٌ فَقَالَ لَهَا وَلِلْأَرْضِ ائْتِيَا طَوْعًا أَوْ كَرْهًا قَالَتَا أَتَيْنَا طَائِعِينَ ﴿11﴾

११. फिर आकाश की तरफ़ बुलन्द हुआ और वह धुँआ (सा) था, तो उसे और धरती को हुक्म दिया कि तुम दोनों आओ, चाहो यह न चाहो[3] दोनों ने निवेदन (अर्ज़) किया कि हम ख़ुशी-ख़ुशी हाज़िर हैं।

[1] أقوات (अक़्वात) قوت कूत (रोजी, खाद्य) का बहुवचन (जमा) है, यानी धरती पर सभी बसने वाली मख़लूक़ की रोजी उस में रख दिया या उसकी व्यवस्था (एहतेमाम) कर दी। अल्लाह की इस योजना और व्यवस्था का काम इतना बड़ा है कि कोई ज़ुबान उसका बयान नहीं कर सकती, कोई कलम उसे लिख नहीं सकता कोई कलकूलेटर उसे गिन नहीं सकता। कुछ ने इसका मतलब यह लिया है कि हर इलाक़े में ऐसी चीजें पैदा कर दीं जो दूसरे इलाक़े में नहीं पैदा हो सकतीं ताकि हर इलाक़े की यह ख़ास पैदावार उन इलाक़ों का व्यवपार और रिज़्क़ का ज़रिया बन जायें, यह मतलब भी अपनी जगह पर सही और बिल्कुल हक़ीक़त है।

[2] سواء (सवाअ) का मतलब है पूरे चार दिन में, यानी सवाल करने वालों को बता दो कि पैदाईश और फैलाव का काम चार दिन में हुआ या पूरा या बराबर. यह जवाब है सवालियों के लिए।

[3] यह आना किस तरह था इसकी हालत नहीं बताई जा सकती? यह दोनों अल्लाह के पास आये जैसे उस ने चाहा, कुछ ने इसका मतलब लिया है कि मेरे हुक्म का पालन करो, उन्होंने कहा ठीक है हम हाज़िर हैं। अल्लाह ने आसमान को हुक्म किया कि सूरज, चाँद और सितारे निकाल दे और धरती से कहा कि चश्मा जारी कर दे और फल उगा दे। (इब्ने कसीर) या मतलब है कि तुम दोनों वजूद में आ जाओ।

فَقَضٰىهُنَّ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ فِيْ يَوْمَيْنِ وَاَوْحٰى فِيْ كُلِّ سَمَآءٍ اَمْرَهَا ۗ وَزَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيْحَ ۖ وَحِفْظًا ۗ ذٰلِكَ تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ (12)

१२. तो दो दिन में सात आकाश बना दिये, हर आकाश में उसके मुनासिब अहकाम की वह्यी भेज दी, और हमने दुनियावी आकाश को तारों से सजाया और हिफ़ाज़त की, यह योजना (तदबीर) अल्लाह जबरदस्त जानने वाले की है।

فَاِنْ اَعْرَضُوْا فَقُلْ اَنْذَرْتُكُمْ صٰعِقَةً مِّثْلَ صٰعِقَةِ عَادٍ وَّثَمُوْدَ (13)

१३. अब भी ये विमुख हों तो कह दीजिए कि मैं तुम्हें उस कड़क (आसमानी अज़ाब) से डरा देता हूँ जो आद क़ौम और समूद क़ौम के कड़क के समान होगा।

اِذْ جَآءَتْهُمُ الرُّسُلُ مِنْۢ بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّا اللّٰهَ ۗ قَالُوْا لَوْ شَآءَ رَبُّنَا لَاَنْزَلَ مَلٰٓئِكَةً فَاِنَّا بِمَآ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ (14)

१४. उन के पास जब उन के आगे-पीछे से पैग़म्बर आये कि तुम अल्लाह के सिवाय किसी की इबादत न करो, तो उन्होंने जवाब दिया कि अगर हमारा रब चाहता तो फ़रिश्तों को भेजता; हम तो तेरी रिसालत का पूरे तौर से इंकार करते हैं।

فَاَمَّا عَادٌ فَاسْتَكْبَرُوْا فِى الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَقَالُوْا مَنْ اَشَدُّ مِنَّا قُوَّةً ۗ اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ الَّذِيْ خَلَقَهُمْ هُوَ اَشَدُّ مِنْهُمْ قُوَّةً ۗ وَكَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَجْحَدُوْنَ (15)

१५. तो जब आद ने बिला वजह धरती पर तकब्बुर शुरू कर दिया और कहने लगे कि हम से ताक़त वाला कौन है, क्या उन्हें यह नहीं दिखायी दिया कि जिस ने उन्हें पैदा किया वह उन से ज़्यादा ताक़त वाला है। वे (आख़िर तक) हमारी आयतों का इंकार ही करते रहे।

فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيْحًا صَرْصَرًا فِيْٓ اَيَّامٍ نَّحِسَاتٍ لِّنُذِيْقَهُمْ عَذَابَ الْخِزْيِ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۗ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَخْزٰى وَهُمْ لَا يُنْصَرُوْنَ (16)

१६. तो आख़िर में हम ने उन पर एक तेज़ गति वाली आँधी, अशुभ (मन्हूस) दिनों में[1] भेज दी कि उन्हें दुनियावी ज़िन्दगी में अपमान वाले अज़ाब का मज़ा चखा दें। (यक़ीन करो) कि आख़िरत का अज़ाब इस से ज़्यादा रुस्वा करने वाला है और वे मदद नहीं किये जायेंगे।

---

[1] نَحِسَات का अनुवाद (तर्जुमा) कुछ ने लगातार किया है क्योंकि यह हवा सात रातें और आठ दिन तक लगातार चलती रही, कुछ ने तेज़, कुछ ने धूल-धप्पड़ वाली और कुछ ने मन्हूस किया है। आख़िरी तर्जुमा का मतलब यह होगा कि यह दिन जिन में उन पर कड़ी हवा की आँधी आयी, उन के लिए बड़े मन्हूस साबित हुए, यह नहीं कि दिन ही ख़ुद मन्हूस (अशुभ) हैं।

१७. और रहे समूद, तो हम ने उनका भी मार्गदर्शन (रहनुमाई) किया फिर भी उन्होंने मार्गदर्शन पर अंधेपन को महत्व (अहमियत) दिया, जिसके सबब उन्हें (पूरे तौर से) अपमान वाली यातना (अज़ाब) की कड़क ने उन के करतूतों के सबब पकड़ लिया।[1]

وَاَمَّا ثَمُوْدُ فَهَدَيْنٰهُمْ فَاسْتَحَبُّوا الْعَمٰى عَلَى الْهُدٰى فَاَخَذَتْهُمْ صٰعِقَةُ الْعَذَابِ الْهُوْنِ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ (17)

१८. और ईमानदार और परहेज़गारों को हम ने (बाल-बाल) बचा लिया।

وَنَجَّيْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ (18)

१९. और जिस दिन अल्लाह के दुश्मन नरक की तरफ़ लाये जायेंगे और उन (सब) को जमा कर दिया जायेगा।

وَيَوْمَ يُحْشَرُ اَعْدَآءُ اللّٰهِ اِلَى النَّارِ فَهُمْ يُوْزَعُوْنَ (19)

२०. यहाँ तक कि जब नरक के बहुत क़रीब आ जायेंगे उन पर उन के कान और उनकी आँखें और उनकी खालें उन के अमल की गवाही देंगे।

حَتّٰۤى اِذَا مَا جَآءُوْهَا شَهِدَ عَلَيْهِمْ سَمْعُهُمْ وَاَبْصَارُهُمْ وَجُلُوْدُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ (20)

२१. और ये अपनी खालों से कहेंगे कि तुम ने हमारे ख़िलाफ़ गवाही क्यों दी, वह जवाब देंगे कि हमें उस अल्लाह ने बोलने की ताक़त दी जिस ने हर चीज़ को बोलने की ताक़त अता की है, उसी नें पहली बार तुम्हें पैदा किया और उसी की तरफ़ तुम सब लौटाये जाओगे।

وَقَالُوْا لِجُلُوْدِهِمْ لِمَ شَهِدْتُّمْ عَلَيْنَا ؕ قَالُوْۤا اَنْطَقَنَا اللّٰهُ الَّذِيْۤ اَنْطَقَ كُلَّ شَيْءٍ وَّهُوَ خَلَقَكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ (21)

२२. और तुम (अपने करतूत) इस वजह से छिपा कर रखते ही न थे कि तुम पर तुम्हारे कान और तुम्हारी आँखें और तुम्हारी खालें गवाही देंगी[2] और तुम यह समझते रहे कि तुम जो कुछ भी कर रहे हो उस में से बहुत से कर्मों से अल्लाह अंजान है।

وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَتِرُوْنَ اَنْ يَّشْهَدَ عَلَيْكُمْ سَمْعُكُمْ وَلَاۤ اَبْصَارُكُمْ وَلَا جُلُوْدُكُمْ وَلٰكِنْ ظَنَنْتُمْ اَنَّ اللّٰهَ لَا يَعْلَمُ كَثِيْرًا مِّمَّا تَعْمَلُوْنَ (22)

---

[1] صاعقة (साइक:) सख़्त अज़ाब को कहते हैं, यह कड़ा अज़ाब उन पर चिंघाड़ और भूकम्प (ज़लज़ला) के रूप में आया, जिस ने ज़िल्लत और रुस्वाई के साथ उन्हें तहस-नहस कर दिया।

[2] इसका मतलब है कि तुम पाप का अमल करते हुए तो लोगों से छुपने की कोशिश करते थे लेकिन तुम्हें इसका कोई डर नहीं था कि तुम्हारे ख़िलाफ़ ख़ुद तुम्हारे अंग भी गवाही देंगे कि जिन से छुपने की ज़रूरत का आभास करते, इसका सबब उनका दोबारा ज़िन्दगी से इंकार और कुफ़्र था।

وَذٰلِكُمْ ظَنُّكُمُ الَّذِىْ ظَنَنْتُمْ بِرَبِّكُمْ اَرْدٰىكُمْ فَاَصْبَحْتُمْ مِّنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿23﴾

२३. और तुम्हारे इसी कुविचार (वदगुमानी) ने जो तुम ने अपने रब के बारे में कर रखे थे, तुम्हें नाश कर दिया, और आख़िर में तुम नुक़सान उठाने वालों में से हो गये।

فَاِنْ يَّصْبِرُوْا فَالنَّارُ مَثْوًى لَّهُمْ ۚ وَاِنْ يَّسْتَعْتِبُوْا فَمَا هُمْ مِّنَ الْمُعْتَبِيْنَ ﴿24﴾

२४. अब अगर ये सब्र करें तो भी उनका ठिकाना नरक ही है और अगर ये तौवा भी करना चाहें तो भी माफ़ नहीं किये जायेंगे।

وَقَيَّضْنَا لَهُمْ قُرَنَآءَ فَزَيَّنُوْا لَهُمْ مَّا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَحَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِىْٓ اُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ ۚ اِنَّهُمْ كَانُوْا خٰسِرِيْنَ ﴿25﴾

२५. और हम ने उन के कुछ साथी निर्धारित (मुक़र्रर) कर रखे थे जिन्होंने उन के अगले-पिछले कर्मों को उनकी नजर में ख़ूबसूरत बना रखे थे,[1] और उन के हक़ में भी अल्लाह का वादा उन क़ौमों के साथ पूरा हुआ जो उन से पहले जिन्नों और इंसानों की गुजर चुकी हैं। वेशक वे नुक़सान उठाने वाले सावित हुए।

وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَا تَسْمَعُوْا لِهٰذَا الْقُرْاٰنِ وَالْغَوْا فِيْهِ لَعَلَّكُمْ تَغْلِبُوْنَ ﴿26﴾

२६. और काफ़िरों ने कहा कि इस क़ुरआन को सुनो ही मत (उन के पाठ करने के समय) और वेहूदा बातें करो, क्या अजव कि तुम गालिब हो जाओ।

فَلَنُذِيْقَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَذَابًا شَدِيْدًا وَّلَنَجْزِيَنَّهُمْ اَسْوَاَ الَّذِىْ كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿27﴾

२७. तो वेशक हम उन काफ़िरों को सख़्त अज़ाब का मज़ा चखायेंगे और उन्हें उन के बहुत बुरे अमल का बदला (ज़रूर) देगें।

ذٰلِكَ جَزَآءُ اَعْدَآءِ اللّٰهِ النَّارُ ۚ لَهُمْ فِيْهَا دَارُ الْخُلْدِ ؕ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَجْحَدُوْنَ ﴿28﴾

२८. अल्लाह के दुश्मनों का बदला (दण्ड) यही नरक की आग है, जिस में उनका हमेशा का घर है, (यह) वदला है हमारी आयतों के इंकार करने का।[2]

---

[1] इन से मुराद वह शैतान, इंसान और जिन्न हैं जो झूठ पर इसरार (दुराग्रह) करने वालों के संग लग जाते हैं, जो उन्हें कुफ़्र और गुनाहों को अच्छा बनाकर दिखाते हैं तो वह इस गुमराही के दलदल में फंसे रहते हैं यहाँ तक कि उनकी मौत आ जाती है और वह सदा के नुक़सान के लायक़ बन जाते हैं।

[2] आयतों से मुराद जैसाकि पहले भी बताया गया है कि वह खुले सुबूत और दलीलें हैं जो अल्लाह

وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا رَبَّنَا أَرِنَا الَّذَيْنِ أَضَلَّانَا مِنَ الْجِنِّ وَالْإِنسِ نَجْعَلْهُمَا تَحْتَ أَقْدَامِنَا لِيَكُونَا مِنَ الْأَسْفَلِينَ ﴿29﴾

२९. और काफिर लोग कहेंगे कि हे हमारे रब! हमें जिन्नों और इंसानों के उन (दोनों गिरोहों) को दिखा, जिन्होंने हमें भटकाया (ताकि) हम उन को अपने पैरों के नीचे डाल दें ताकि वे बहुत नीचे (सख़्त अजाब में) हो जायें।

إِنَّ الَّذِينَ قَالُوا رَبُّنَا اللَّهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوا تَتَنَزَّلُ عَلَيْهِمُ الْمَلَائِكَةُ أَلَّا تَخَافُوا وَلَا تَحْزَنُوا وَأَبْشِرُوا بِالْجَنَّةِ الَّتِي كُنتُمْ تُوعَدُونَ ﴿30﴾

३०. हक़ीक़त में जिन लोगों ने कहा कि हमारा रब अल्लाह है फिर उसी पर जमे रहे,[1] उन के पास फ़रिश्ते (यह कहते हुए) आते हैं कि तुम कुछ भी भयभीत (ख़ौफ़ज़दा) और दुखी न हो (बल्कि) उस जन्नत की ख़ुशख़बरी सुन लो जिसका तुम्हें वादा दिया गया है।

نَحْنُ أَوْلِيَاؤُكُمْ فِي الْحَيَاةِ الدُّنْيَا وَفِي الْآخِرَةِ وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَشْتَهِي أَنفُسُكُمْ وَلَكُمْ فِيهَا مَا تَدَّعُونَ ﴿31﴾

३१. तुम्हारी दुनियावी ज़िन्दगी में भी हम तुम्हारे मददगार थे और आख़िरत में भी रहेंगे, जिस चीज़ को तुम्हारा मन चाहे और जो कुछ माँगो सब तुम्हारे लिये [जन्नत में मौजूद (उपस्थित)] है।

نُزُلًا مِّنْ غَفُورٍ رَّحِيمٍ ﴿32﴾

३२. बड़ा माफ़ करने वाला बड़े मेहरबान की तरफ़ से ये सब कुछ मेहमानी के रूप में है।

وَمَنْ أَحْسَنُ قَوْلًا مِّمَّن دَعَا إِلَى اللَّهِ وَعَمِلَ صَالِحًا وَقَالَ إِنَّنِي مِنَ الْمُسْلِمِينَ ﴿33﴾

३३. और उस से ज़्यादा अच्छी बात वाला कौन है जो अल्लाह की तरफ़ बुलाये, नेकी के काम करे और कहे कि मैं यक़ीनी तौर से मुसलमानों

तआला अम्बिया (ईशदूतों) पर उतारता है, या वह मोजिज़ा हैं जो उनको दिये जाते हैं, या पैदाईश के वे सुबूत हैं जो दुनिया और प्राणियों (मख़लूक़ात) में फैले हुए हैं। काफ़िर इन सब ही का इंकार करते हैं जिस के सबब वह ईमान से वंचित (महरूम) रहते हैं।

[1] यानी कठिन से कठिन हालत में भी ईमान पर क़ायम रहे, उस से फिरे नहीं। कुछ ने क़ायम रहने का मतलब इख़्लास लिया है, यानी सिर्फ़ एक अल्लाह ही की इबादत और इताअत की। जिस तरह हदीस में आता है कि एक आदमी ने रसूलुल्लाह ﷺ से कहा। "मुझे ऐसी बात बतला दें कि आप के बाद मुझे किसी से सवाल करने की ज़रूरत न हो।" आप ने फ़रमाया :

«قُلْ آمَنْتُ بِاللهِ ثُمَّ اسْتَقِمْ»

"कह, मैं अल्लाह पर ईमान लाया, फिर इस पर अडिग रह।" (सहीह मुस्लिम, किताबुल ईमान, बाबु जामिअे औसाफ़िल इस्लाम)

में से हूँ।

३४. और नेकी और बुराई बराबर नहीं होते, बुराई को भलाई से दूर करो, फिर वही जिस के और तुम्हारे बीच दुश्मनी है ऐसा हो जायेगा जैसे जिगरी दोस्त।[1]

وَلَا تَسْتَوِى الْحَسَنَةُ وَلَا السَّيِّئَةُ ۖ اِدْفَعْ بِالَّتِىْ هِىَ اَحْسَنُ فَاِذَا الَّذِىْ بَيْنَكَ وَبَيْنَهٗ عَدَاوَةٌ كَاَنَّهٗ وَلِىٌّ حَمِيْمٌ ﴿34﴾

३५. और यह बात उन्हीं की ख़ुशनसीबी में होती है जो सब्र करें, और उसे बड़े ख़ुशनसीब के सिवाय कोई नहीं हासिल कर सकता।[2]

وَمَا يُلَقّٰهَآ اِلَّا الَّذِيْنَ صَبَرُوْا ۚ وَمَا يُلَقّٰهَآ اِلَّا ذُوْ حَظٍّ عَظِيْمٍ ﴿35﴾

३६. और अगर शैतान की तरफ़ से कोई शक पैदा हो जाये तो अल्लाह की पनाह चाहो। बेशक वह बड़ा सुनने वाला जानने वाला है।

وَاِمَّا يَنْزَغَنَّكَ مِنَ الشَّيْطٰنِ نَزْغٌ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ ۖ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿36﴾

३७. और दिन-रात और सूरज और चाँद भी उसी की निशानियों में से हैं, तुम सूरज और चाँद के सामने सिर न झुकाओ बल्कि सिर उस अल्लाह के सामने झुकाओ जिस ने उन सबको पैदा किया है, अगर तुम्हें उसी की इबादत करनी है।

وَمِنْ اٰيٰتِهِ الَّيْلُ وَالنَّهَارُ وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ ۚ لَا تَسْجُدُوْا لِلشَّمْسِ وَلَا لِلْقَمَرِ وَاسْجُدُوْا لِلّٰهِ الَّذِىْ خَلَقَهُنَّ اِنْ كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ﴿37﴾

३८. फिर भी अगर वे तकब्बुर करें तो वे (फ़रिश्ते) जो आप के रब के क़रीब हैं, वे तो रात-दिन उसकी महिमा (तस्बीह) का बयान करते हैं और (किसी समय भी) नहीं थकते।

فَاِنِ اسْتَكْبَرُوْا فَالَّذِيْنَ عِنْدَ رَبِّكَ يُسَبِّحُوْنَ لَهٗ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَهُمْ لَا يَسْئَمُوْنَ ﴿38﴾ السجدة

[1] यह एक बहुत ही अहम अख़लाक़ी (नैतिक) हिदायत है कि बुराई को अच्छाई के साथ टालो, यानी बुराई का बदला एहसान के साथ, ज़ुल्म का माफ़ी से, ग़ुस्सा का सब्र से और अप्रिय (बेहूदा) बातों का समझा कर जवाब दिया जाये। इसका असर यह होगा कि तुम्हारा दुश्मन दोस्त बन जायेगा, दूर, क़रीब और ख़ून का प्यासा तुम्हारा चाहने वाला और जान निछावर करने वाला हो जायेगा।

[2] حَظٍّ عَظِيْمٍ (बड़ा सौभाग्य) से मुराद जन्नत है, यानी ऊपरी गुण (अवसाफ़) उनको हासिल होते हैं जो बड़े भाग्यशाली (नसीब वाला) होते हैं, यानी जन्नती, जिनका जन्नत में जाना लिख दिया गया हो।

وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنَّكَ تَرَى الْاَرْضَ خَاشِعَةً فَاِذَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْهَا الْمَآءَ اهْتَزَّتْ وَرَبَتْ ؕ اِنَّ الَّذِيْٓ اَحْيَاهَا لَمُحْيِ الْمَوْتٰى ؕ اِنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿39﴾

३९. और उस (अल्लाह) की निशानियों में से (यह भी) है कि तू धरती को दबी दबायी (शुष्क) देखता है, फिर जब हम उस पर वर्षा करते हैं तो वह तरो-ताज़ा होकर उभरने लगती है। जिस ने उसे ज़िन्दा कर दिया वही निश्चित रूप (यक़ीनी तौर) से मुर्दों को भी ज़िन्दा करने वाला है।[1] बेशक वह हर चीज़ पर क़ादिर है।

اِنَّ الَّذِيْنَ يُلْحِدُوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِنَا لَا يَخْفَوْنَ عَلَيْنَا ؕ اَفَمَنْ يُّلْقٰى فِي النَّارِ خَيْرٌ اَمْ مَّنْ يَّاْتِيْٓ اٰمِنًا يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اِعْمَلُوْا مَا شِئْتُمْ ۙ اِنَّهٗ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿40﴾

४०. बेशक जो लोग हमारी आयतों में टेढ़ापन करते हैं[2] वह (कुछ) हम से छिपे नहीं, (बताओ तो) जो आग में डाला जाये वह अच्छा है या वह जो अमन व अमान से (शान्तिपूर्वक) क़यामत के दिन आये? तुम जो चाहो करते जाओ; वह तुम्हारा सब किया कराया देख रहा है।

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِالذِّكْرِ لَمَّا جَآءَهُمْ ۚ وَاِنَّهٗ لَكِتٰبٌ عَزِيْزٌ ﴿41﴾

४१. जिन लोगों ने अपने पास पाक क़ुरआन पहुँच जाने के बावजूद उस से कुफ़्र किया (वह भी हम से छिपे नहीं), यह बहुत अज़ीम (सम्मानित) किताब है।

لَّا يَاْتِيْهِ الْبَاطِلُ مِنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَلَا مِنْ خَلْفِهٖ ؕ تَنْزِيْلٌ مِّنْ حَكِيْمٍ حَمِيْدٍ ﴿42﴾

४२. जिस के पास असत्य (बातिल) फटक भी नहीं सकता न उस के आगे से और न उस के पीछे से, यह है नाज़िल की हुई (अल्लाह) हिक्मत वाले और गुणों वाले की तरफ़ से।

[1] मुर्दा ज़मीन को बारिश के ज़रिये इस तरह जीवन प्रदान कर देना और उस से उपज (खेती) के लायक बनाना इस बात का सुबूत है कि वह मुर्दों को भी बेशक ज़िन्दा करेगा।

[2] यानी उसको मानते नहीं बल्कि उस से मुँह फेरते और झुठलाते हैं। हज़रत इब्ने अब्बास ने إلحاد (इल्हाद) का तर्जुमा किया है وضع الكلام على غير مواضعه, इस बिना पर इस में वह झूठा गिरोह भी आ जाते हैं जो अपने झूठे यक़ीन और सिद्धान्त (उसूल) की सिद्धि (साबित) करने के लिए अल्लाह की आयतों के मतलब में परिवर्तन (बदलाव) करते और धोखे-धड़ी से काम लेते हैं।

مَا يُقَالُ لَكَ إِلَّا مَا قَدْ قِيلَ لِلرُّسُلِ مِن قَبْلِكَ ۚ إِنَّ رَبَّكَ لَذُو مَغْفِرَةٍ وَذُو عِقَابٍ أَلِيمٍ ﴿43﴾

४३. आप से वही कहा जाता है जो आप से पहले के रसूलों से भी कहा गया है। बेशक आप का रब माफ़ करने वाला और दुखदायी अज़ाब देने वाला है।

وَلَوْ جَعَلْنَاهُ قُرْآنًا أَعْجَمِيًّا لَّقَالُوا لَوْلَا فُصِّلَتْ آيَاتُهُ ۖ أَأَعْجَمِيٌّ وَعَرَبِيٌّ ۗ قُلْ هُوَ لِلَّذِينَ آمَنُوا هُدًى وَشِفَاءٌ ۖ وَالَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ فِي آذَانِهِمْ وَقْرٌ وَهُوَ عَلَيْهِمْ عَمًى ۚ أُولَٰئِكَ يُنَادَوْنَ مِن مَّكَانٍ بَعِيدٍ ﴿44﴾

४४. और अगर हम उसे ग़ैर अरबी भाषा (ज़ुबान) का क़ुरआन बनाते तो कहते कि इसकी आयतें साफ़ तौर से बयान क्यों नहीं की गईं? यह क्या कि किताब ग़ैर अरबी और आप अरबी रसूल? (आप) कह दीजिए कि यह ईमानवालों के लिए हिदायत और शिफ़ा है, और जो ईमान नहीं लाते तो उन के कानों में (बहरापन) बोझ है और यह उन पर अंधापन है, ये वे लोग हैं जो किसी दूर जगह से पुकारे जा रहे हैं।[1]

وَلَقَدْ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ فَاخْتُلِفَ فِيهِ ۗ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِن رَّبِّكَ لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ ۚ وَإِنَّهُمْ لَفِي شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيبٍ ﴿45﴾

४५. और बेशक हम ने मूसा (ﷺ) को किताब अता की थी तो उस में भी मतभेद (इख़्तिलाफ़) किया गया और अगर (वह) बात न होती जो आप के रब की तरफ़ से पहले ही मुक़र्रर हो चुकी है तो उन के बीच (कभी का) फ़ैसला हो चुका होता, यह लोग तो उस के बारे में सख़्त बेचैन करने वाली शक में हैं।

مَّنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِنَفْسِهِ ۖ وَمَنْ أَسَاءَ فَعَلَيْهَا ۗ وَمَا رَبُّكَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيدِ ﴿46﴾

४६. जो इंसान नेकी के काम करेगा वह अपने फ़ायदे के लिए और जो बुरा काम करेगा उसका भार भी उसी पर है, और आप का रब बन्दों पर ज़ुल्म करने वाला नहीं।[2]

[1] यानी जिस तरह दूर का इंसान दूरी की वजह से पुकारने वाले की आवाज़ सुनने से मजबूर रहता है, इसी तरह इन लोगों की अक़्ल और हवास में क़ुरआन नहीं आता।

[2] इसलिए कि वह सज़ा सिर्फ़ उसी को देता है जो पापी होता है, न कि जिसे चाहे बिला वजह ही अज़ाब में ग्रस्त (मुब्तिला) कर दे।